ज़िन्दगी का पेड़

संकलनकर्ता
सुषमा गुप्ता

Cover Title : Zindagi Ka Ped (Tree of Life)
Cover Page picture : Tree
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: sushmajee@yahoo.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm
Read More such stories at: www.scribd.com/sushma_gupta_1

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World

विंडसर, कैनेडा
दिसम्बर 2018

Contents

सीरीज़ की भूमिका 4
ज़िन्दगी का पेड़ 5
1 बड़ा अंडू और छोटा अंडी 7
2 आदमी जो सम्पूर्ण बनना चाहता था 19
3 राजकुमार 35
4 सोने के अंडे वाला केंकड़ा 56
5 सात सिर वाला राक्षस 69
6 मार्या मोरेवना 96
7 गाता हुआ पेड़ और बोलती हुई चिड़िया 121

सीरीज़ की भूमिका

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक 1500 से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से 400 से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब 95 प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
दिसम्बर 2018

ज़िन्दगी का पेड़

क्या तुमने कभी कोई ऐसी कहानी सुनी या पढ़ी है जिसमें लोगों ने अपनी अपनी ज़िन्दगी के पेड़ लगाये हैं। ये पेड़ अक्सर तब लगाये जाते हैं जब कोई कहीं दूर जात है या फिर किसी मुश्किल काम करने के लिये जाता है। इन पेड़ों की खासियत यह होती है कि ये पेड़ लगाने वाले की तन्दुरुस्ती और उसके ऊपर आने वाली मुश्किलों का पता देते हैं।

सामान्यतया ऐसा होता भी है कि हर कहानी में यह अअदमी पेड़ लगा कर चला जाता है और बाद में या तो यह पेड़ सूखने लगता है या इसकी पत्तियॉ पीली हो कर गिर जाती हैं जो यह बताती हैं कि इस पेड़ को लगाने वाला मुसीबत में है फिर कोई दूसरा उसको देखने और बचाने के लिये जाता है।

कहीं कहीं लोग पेड़ नहीं लगाते अपनी कोई चीज़ छोड़ जाते हैं या कुछ और कर जाते हैं जो घर पर रह रहे लोगों को जाने वाले की हालत का पता देती है और जिसको देख कर वे यह जान जाते हैं कि उनका वह आदमी मुसीबत में है और वे उसकी सहायता के लिये चले जाते हैं।

यहॉ ऐसी ही कुछ लोक कथाऐं दी जा रही हैं जिनमें लोगों ने अपने अपने घर छोड़ने से पहले अपनी अपनी ज़िन्दगी के पेड़ लगाये हैं या कुछ और चीज़ छोड़ी है।

ये कथाऐं बहुत शिक्षाप्रद हैं। आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम लोगों को सीख देने के अलावा तुम लोगों का भरपूर मनोरंजन भी करेंगी।

1 बड़ा अंडू और छोटा अंडी[1]

पेड़ लगाने की यह लोक कथा पश्चिमी अफ्रीका की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक गॉव में एक आदमी रहता था जिसके दो पत्नियॉ थीं। इत्तफाक से दोनों पत्नियों ने एक ही दिन दो बेटों को जन्म दिया। एक ने सुबह को, और दूसरी ने तीसरे पहर को।

सुबह पैदा हुए बेटे का नाम रखा गया अंडू बाबा, और तीसरे पहर में पैदा हुए बेटे का नाम रखा गया अंडी करामी।

जन्म के दिन से ही वे दोनों बिल्कुल एक जैसे लगते थे और एक साथ ही रहते थे। जब वे जवान हो गये तो उनके पिता ने उनके लिये दो अलग अलग मकान बनवा दिये।

अंडू बाबा के मकान के आगे लगा डुरूमी का पेड़, और अंडी करामी के मकान के आगे लगा चेदिया[2] का पेड़।

कुछ दिनों के बाद अंडी करामी की मॉ मर गयी तो उसके पिता ने उसको अंडू बाबा की मॉ की देखभाल में रख दिया। उस दिन से तो वे दोनों हर समय एक साथ ही रहने लगे। यहॉ तक कि कोई एक दूसरे के बिना खाना भी नहीं खाता था।

---

[1] Elder Andee and Younger Andoo – a folktale from Africa

[2] Both Durumi and Chedia are the trees of Africa.

जब वे कुछ और बड़े हो गये तो उनके पिता ने उन दोनों की शादी कर दी, और वह भी एक ही दिन। जब शादी की रस्में खत्म हो गयीं तो अंडी करामी बातें करने के विचार से अंडू बाबा के घर गया।

वे दोनों रात गये तक बातें करते रहे। बाद में अंडू बाबा बोला — "अंडी, अब काफी समय हो गया है अब तुम अपने घर जाओ। चलो, मैं तुम्हें तुम्हारे घर छोड़ आता हूँ।"

अंडी करामी बोला — "कमाल है, हम और तुम इतनी बढ़िया बातें कर रहे हैं और तुम कहते हो कि मैं घर चला जाऊँ।"

अंडू बाबा बोला — "बुरा न मानो अंडी, मैं तो तुम्हारी पत्नी के बारे में सोच रहा था। मैं नहीं चाहता कि वह तुमसे रूठ कर मेरे बारे में यह कहे कि मैं फालतू आदमी तुमको उससे दूर रखता हूँ। इसलिये चलो, घर चलो।"

अंडी को यह बात समझ में आ गयी और वह जाने के लिये तैयार हो गया। अंडू बाबा अंडी को घर तक छोड़ने गया, मगर वह खुद अंडी के घर बैठ गया और फिर वहाँ वे दोनों रात भर बातें करते रहे। सारी रात बीत गयी थी परन्तु उनकी तो बातें हीं खत्म होने पर ही नहीं आ रही थीं। लग रहा था जैसे वे बरसों बाद मिले हों।

अंडी करामी ने अपनी पत्नी से कहा — "मुझे थोड़ा पानी दो, मैं हाथ मुॅह धो कर अंडू बाबा के घर जा रहा हूॅ।" अंडी करामी की पत्नी ने उसको पानी ला दिया और अंडी करामी हाथ मुॅह धो कर अंडू बाबा के साथ उसके घर चला गया।

लेकिन जब वे अंडू बाबा के घर आ गये तो अंडू बाबा ने फिर उसे चेतावनी दी — "देखो, औरतों को अक्ल कम होती है, उनके दिमाग में सन्तुलन की भी कमी होती है इसलिये तुमको घर पर ही अधिक समय बिताना चाहिये नहीं तो तुम्हारा अपनी पत्नी से झगड़ा हो जायेगा।"

उस दिन के बाद से अंडी करामी सोता तो अपने घर में था परन्तु सुबह शाम अंडू बाबा के घर जरूर जाता था और वे दोनों साथ ही खाना खाते थे। पर अंडू बाबा की पत्नी को भोजन का यह हिस्सा बॉट अच्छा नहीं लगता था।

एक दिन उसने अपने पति के लिये एक खास पकवान बनाया और जैसे ही अंडू बाबा उसे खाने बैठा कि अंडी करामी आ गया। अंडू बाबा बोला — "आओ आओ, बड़े मौके से आये हो, आओ तुम भी मेरे साथ ही खाना खा लो।"

लेकिन अंडी करामी को यह देख कर बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा कि अंडू बाबा उसके बिना ही खाना खा रहा था। उसने बहाना बनाते हुए कहा — "मैंने अभी दवा खायी है इसलिये मैं अभी कुछ नहीं खा सकता, तुम खाओ।"

अंडी करामी वहाँ कुछ देर बैठ कर जल्दी ही अपने घर वापस चला गया और अपने एक नौकर से अपना घोड़ा सजाने को कहा।

जब सब कुछ तैयार हो गया तो वह घोड़े पर बैठ कर अंडू बाबा के घर गया और बोला कि वह यात्रा पर जा रहा है।

अंडू बाबा ने पूछा — "लेकिन तुम जा कहाँ रहे हो?"

अंडी करामी बोला — "मुझे खुद ही नहीं पता कि मैं कहाँ जा रहा हूँ, पर जिस दिन भी मेरे चेदिया के पेड़ की पत्तियाँ झड़ें तो तुम समझ लेना कि मैं इस दुनियाँ में नहीं हूँ।"

अंडू बाबा बोला — "क्या सचमुच ऐसा है?"

अंडी करामी बोला — "हाँ सचमुच ही ऐसा है।" और यह कह कर अंडी करामी ने अपने घोड़े की लगाम सँभाली और अपनी यात्रा पर चल दिया।

अंडी करामी और उसका नौकर अभी कुछ ही दूर गये थे कि उनको एक आलूबुखारे का पेड़[3] दिखायी दिया जिस पर दो आलूबुखारे लगे हुए थे।

वह अपने नौकर से बोला — "तुम वह दो आलूबुखारे देख रहे हो न? उनमें से एक आलूबुखारा तुम तोड़ लो और दूसरा उसके लिये छोड़ दो, शायद वह कभी इधर आ निकले।"

[3] Translated for the word "Plum" – see the picture of a plum tree above.

नौकर ने उनमें से एक आलूबुखारा तोड़ लिया। अंडी करामी ने आधा आलूबुखारा खुद खाया और आधा अपने नौकर को दे दिया।

चलते चलते रात हो गयी थी इसलिये रात बिताने के लिये वे लोग एक शहर में रुके। वहाँ एक शीनट[4] का पेड़ लगा हुआ था।

उसमें दो शीनट लगे थे। सो उसमें से उसने एक शीनट तोड़ लिया, आधा खुद खाया और आधा अपने नौकर को दे दिया, और दूसरा शीनट अंडू बाबा के लिये उसी पेड़ पर छोड़ दिया।

शहर में जिस घर में उन्होंने खाना खाया उस घर के मालिक ने शाम के खाने के लिये चार मुर्गे मारे थे।

जब वह उनको अंडी करामी के पास लाया तो उसने उन मुर्गों में से दो मुर्गे उसे वापस कर दिये और कहा — "आप मेहरबानी कर के इन्हें मेरे लौटने तक बचा कर रखें।"

अगले दिन अंडी करामी अपनी यात्रा पर फिर से निकल पड़ा। दूसरे दिन वे जिस घर में रुके वहाँ उनके लिये एक भेड़ मारा गया।

वहाँ भी उसने आधा भेड़ वापस करके घर के मालिक से कहा — "मेहरबानी करके आप इसे मेरे लौटने तक बचा कर रखें।"

---

[4] Shea Nut tree is found in Africa. Its nut is used to extract cooking oil. See its picture above.

तीसरे दिन वे जिस शहर में रुके वहाँ एक कुँए में एक आदमी खाने वाला राक्षस रहता था। वहाँ के लोग उसे खुश करने के लिये साल में एक बार खाने के लिये एक लड़की दिया करते थे।

इस शहर में वे एक बुढ़िया के घर ठहरे। अंडी करामी ने घोड़े को खोल कर उसे एक पेड़ से बाँध दिया और बुढ़िया से एक बालटी माँगी ताकि वे अपने घोड़े को कुँए से ला कर पानी पिला सकें।

बुढ़िया बोली — "बेटा, तुम नहीं जानते कि तुम क्या कह रहे हो। उस कुँए में तो एक आदमखोर राक्षस रहता है। हर साल हम लोग उसको एक लड़की खाने के लिये देते हैं।

अगर हम ऐसा न करें तो हमें पानी नहीं मिल सकता और इस समय तो हम लोग घर से बाहर बिल्कुल भी नहीं निकल सकते।"

अंडी बोला — "माँ जी, आप मुझे बालटी तो दीजिये। उस राक्षस को मैं देख लूँगा।"

अंडी करामी बुढ़िया से बालटी ले कर कुँए की ओर चल दिया। उस दिन उस राक्षस को देखने की गाँव के सरदार की बेटी की बारी थी सो सरदार की बेटी वहाँ बैठी उस राक्षस का इन्तजार कर रही थी।

अंडी करामी ने अपनी बालटी पानी निकालने के लिये कुँए में डाली तो उसे लगा कि किसी ने उसकी बालटी पकड़ ली है।

अंडी करामी बोला — "जो कोई भी कुँए के अन्दर हो वह मेरी बालटी छोड़ दे और यदि वह मुझसे लड़ना चाहता है तो बाहर आ कर लड़े।"

कुँए में राक्षस था। वह वहीं से बोला — "ठीक है, तुम अपनी बालटी खींच लो। पर यह सोच लो कि बालटी के पीछे पीछे मैं भी बाहर आ रहा हूँ। तुम्हारी भलाई इसी में है कि तुम यहाँ से चले जाओ।"

अंडी करामी ने अपनी बालटी ऊपर खींच ली और तलवार निकाल कर राक्षस से लड़ने को तैयार हो गया। जैसे ही राक्षस का सिर कुँए के बाहर आया तलवार के एक ही झटके से उसने उसका सिर काट दिया।

राक्षस का सिर कटा शरीर तुरन्त कुँए में गिर पड़ा। उसका शरीर कुँए में गिरने से कुँए में एक ज़ोर की आवाज हुई और कुँए का पानी उछल कर सारे शहर में बिखर गया।

राक्षस को मारने के बाद अंडी करामी ने उसकी पूँछ भी काट ली। उसने सरदार की बेटी को वापस उसके घर भेज दिया।

नौकर को पानी ले कर बुढ़िया के पास भेज दिया और वह खुद राक्षस का सिर व पूँछ ले कर घर चल दिया। सुबह होने पर लोगों ने देखा कि सारे शहर में तो पानी फैला पड़ा है।

इतने में सरदार की बेटी ने भी अपने पिता को इस अजनबी के बारे में सब कुछ बता दिया।

सरदार बोला — “तुमको छोड़ कर वह अजनबी फिर कहाँ चला गया?”

सरदार की बेटी बोली — “वह तो बुढ़िया के घर ठहरा है।”

सरदार ने अपने नौकर से कहा कि वह उसको तुरन्त ही उसके घर ले कर आये।

अंडी करामी ने सरदार के नौकर से पूछा — “मैं तो कल रात ही यहाँ आया हूँ, सरदार को कैसे मालूम हुआ कि मैं यहाँ हूँ?”

नौकर बोला — “यह न सोचिये। सरदार ने आपको बुलाया है सो मेहरबानी करके आप हमारे साथ चलें।”

इधर अंडी करामी सरदार के घर जा रहा था और उधर सरदार के घर में शादी की तैयारियाँ हो रही थीं।

जैसे ही वह सरदार के घर पहुँचा, सरदार बोला — “अपनी बेटी की जान बचाने के लिये मैं तुम्हारा बहुत आभारी हूँ और इसके लिये मैं तुमको “यारीमा”[5] का “खिताब”[6] देता हूँ।”

और फिर उसने अपनी बेटी का हाथ उसके हाथ में दे दिया। दोनों की शादी हो गयी और वे दोनों सरदार के दिये हुए एक घर में रहने लगे।

कुछ समय बाद एक खास तरह की चिड़िया का एक झुंड उस शहर में आया तो यह समाचार सरदार के महल में पहुँचा। सरदार ने

[5] Yarima – a title in that society

[6] Translated for the word “Title”

अपने लोगों को हुकुम दिया — "जल्दी जाओ और उन चिड़ियों को उड़ा दो।"

अंडी करामी ने जब यह सुना तो वह भी दूसरे घुड़सवारों के साथ वे चिड़ियें उड़ाने चल दिया।

उन सबके आते ही चिड़ियों का वह झुंड पहाड़ी की तरफ उड़ चला। अंडी करामी भी उनके पीछे पीछे चल दिया। पहाड़ी के पास पहुँचते ही वहाँ एक रास्ता खुल गया और वे चिड़ियाँ उस रास्ते में से हो कर पहाड़ी के अन्दर उड़ चलीं।

अंडी करामी घुड़सवारों में सबसे आगे था। वह भी उसी रास्ते से उनके पीछे पीछे चलता गया। उसके अन्दर जाते ही पहाड़ी में बना वह रास्ता अपने आप ही बन्द हो गया।

दूसरे घुड़सवार उससे बहुत पीछे थे। वे जब तक पहाड़ी के पास तक पहुँचे पहाड़ी वाला रास्ता बन्द हो चुका था। वे नाउम्मीद हो कर घर वापस लौट आये। घर पर भी उन्होंने अंडी करामी को कहीं नहीं देखा तो वे बोले "यारीमा मर गया, यारीमा मर गया"।

इसी समय अंडी करामी के घर के सामने लगे चेदिया पेड़ की शाख से एक पत्ती गिरी। अंडू बाबा उधर से ही जा रहा था। उसने चेदिया के पेड़ की पत्ती गिरती देखी तो बोला — "लगता है अंडी करामी अब नहीं रहा, जल्दी से मेरा घोड़ा तैयार करो।" और तुरन्त ही वह भी यात्रा पर चल दिया।

चलते चलते वह भी उसी आलूबुखारे के पेड़ के पास आया जिस पेड़ पर अंडी करामी ने अंडू बाबा के लिये एक आलूबुखारा छोड़ा था। उसने देखा कि आलुबुखारा सूख गया था। उसने समझ लिया कि अवश्य ही वह आलूबुखारा अंडी करामी ने उसके लिये छोड़ा होगा।

आगे चलने पर उसे एक शीनट का पेड़ मिला। वहाँ से भी उसने अंडी करामी का छोड़ा हुआ एक शीनट तोड़ा और बोला — "लगता है कि यह शीनट भी अंडी करामी ने मेरे लिये ही छोड़ा होगा।"

अब अंडू बाबा पहले गाँव में उसी घर में रुका जिसमें अंडी करामी रुका था। दोनों की सूरत बहुत मिलती जुलती थी सो घर के मालिक को लगा कि अंडी करामी वापस आ गया।

घर का मालिक बोला — "अजनबी, तुम वापस आ गये? हमने तुम्हारे लिये अभी भी वे दोनों मुर्गे रख छोड़े हैं।" कह कर वह दोनों मुर्गे ले आया जो अंडी करामी छोड़ गया था।

अगले शहर में भी यही हुआ। अंडी करामी की रखी आधी भेड़ भी अंडू बाबा को मिल गयी।

अन्त में अंडू बाबा उस शहर में पहुँचा जहाँ अंडी करामी ने राक्षस मारा था। उसको देखते ही लोग बोले — "यारीमा आ गया, यारीमा आ गया"।

सरदार ने सुना तो अपने नौकरों द्वारा उसे अपने घर बुलवाया। अंडू बाबा का "यारीमा" के रूप में उस महल में स्वागत किया गया।

अगले दिन वे चिड़ियाँ फिर आयीं। सरदार ने फिर घुड़सवारों को उन चिड़ियों के पीछे भेजा। इस बार अंडू बाबा भी उनके साथ चल दिया।

चिड़ियाँ जब पहाड़ी के पास पहुँचीं तो वहाँ उस दिन की तरह फिर से रास्ता खुल गया और वे उस रास्ते से अन्दर चली गयीं और रास्ता बन्द हो गया।

यह देख कर अंडू बाबा ने पहाड़ी पर अपनी तलवार से वार किया और पहाड़ी में रास्ता खुल गया। लो, उस पहाड़ी में से तो अंडी करामी बाहर निकल आया।

बाहर निकल कर अंडी करामी बोला — "मैं अंडी हूँ राक्षस को मारने वाला।"

उधर अंडू खुशी से चिल्लाया — "और मैं अंडू हूँ पहाड़ी को खोलने वाला।" दोनों भाई एक दूसरे से लिपट गये और खुशी खुशी सरदार के महल को वापस आये।

सरदार ने जब दोनों को देखा तो बोला — "यह तुम्हारा भाई होगा।"

अंडी बोला — "जी हाँ, यह मेरा बड़ा भाई है।"

सरदार बोला — "यदि ऐसा है तो मैं इसको "गलाडीमान गारी"[7] का खिताब देता हूँ। और यारीमा, तुम घर जा कर अपनी पत्नी से मिलो वह कबसे तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है।"

फिर वे दोनों भाई वहीं रहने लगे और अपने घर ही नहीं गये।

[7] Galadiman Gari

2 आदमी जो सम्पूर्ण बनना चाहता था[8]

एक बार की बात है कि एक सन्यासी एक राजा से मिलने आया। उस राजा के कोई बच्चा नहीं था। सन्यासी ने राजा से कहा — "क्योंकि तुमको एक बेटा चाहिये तो मैं तुम्हारी रानी को एक ऐसी दवा दे सकता हूँ जिसको खा कर उसे जुड़वाँ बच्चे पैदा होंगे।

पर यह दवा मैं तुमको इस शर्त पर दूँगा कि जब वे जुड़वाँ बच्चे पैदा होंगे तो तुम उनमें से एक बच्चा मुझे दे दोगे और दूसरा तुम रख लोगे।"

राजा को सन्यासी की यह शर्त कुछ मुश्किल सी तो जरूर लगी पर फिर भी क्योंकि उसको एक बेटे की बहुत जरूरत थी जो उसका नाम चलाता उसके पैसे जायदाद और राज्य का मालिक बनता उसने उसकी यह शर्त मान ली।

उस सन्यासी ने उसको वह दवा दे दी और रानी ने उसको खा लिया। समय आने पर उसने जुड़वाँ बच्चों को जन्म दिया। ये जुड़वाँ बच्चे एक साल के हुए फिर दो साल के हुए फिर तीन साल

---

[8] The Man Who Wished to be Perfect (Tale No 13) – a folktale from India, Asia.
Taken from the Web Site : https://en.wikisource.org/wiki/Folk-tales_of_Bengal/The_Man_who_wished_to_be_Perfect
Adapted from the book: "Folk-tales of Bengal", by Lal Behari Dey. London, Macmillan & Co Limited. 1912. 1st ed 1883. 22 Tales. This book is available at the above Web Site.

के हुए फिर चार साल के हुए फिर पॉच साल के हुए पर वह सन्यासी अपना बच्चा लेने के लिये वापस नहीं आया।

राजा और रानी ने सोचा कि क्योंकि सन्यासी काफी बुड्ढा था इसलिये हो सकता है कि वह मर गया हो। इस विचार ने उनके दिमाग से बच्चे को ले जाने का डर बिल्कुल ही निकाल दिया।

पर वह सन्यासी भी मरा नहीं था वह तो ज़िन्दा था और बस ज़रा साल गिन रहा था। बच्चे को ले जाने के लिये समय का इन्तजार कर रहा था।

दोनों राजकुमार बड़े हो कर अपनी अपनी पढ़ाई में लग गये थे और दोनों बहुत अच्छा कर रहे थे। वे घुड़सवारी और तीर चलाने में भी बहुत होशियार होते जा रहे थे। इसके अलावा वे बहुत सुन्दर थे तो लोग जब उनको देखते तो देखते के देखते ही रह जाते।

जब दोनों राजकुमार सोलह साल के हो गये तब वह सन्यासी राजा के महल में आया और राजा से अपना वायदा पूरा करने के लिये कहा।

राजा और रानी का दिल तो उन दोनों राजकुमारों में इतना खोया हुआ था कि वे उनसे बिछड़ने की सोच ही नहीं सकते थे। और उस सन्यासी के बारे में तो उन्होंने यह सोच रखा था कि वह अब इस दुनियॉ में है ही नहीं तो वे तो यह देख कर बहुत ही आश्चर्यचकित रह गये कि वह तो हाड़ मॉस के बने शरीर में उनके

सामने खड़ा था और उनका एक नौजवान राजकुमार अपने लिये मॉग रहा था।

राजा और रानी उसको देखते ही दुख के समुद्र में डूब गये। पर वे कुछ नहीं कर सकते थे सिवाय इसके कि वे अपने एक बेटे को अपने से अलग कर दें।

वे सोच रहे थे क्योंकि जब वह हमें दवा दे कर जुड़वॉ बच्चे दे सकता है तो वह हमको शाप दे कर हमारे बच्चों को भस्म भी कर सकता है। और न केवल बच्चों को बल्कि राजा रानी महल और राज्य को भी अपने जूतों तले कुचल सकता है।

पर वह उनमें से उस सन्यासी को किस राजकुमार को दे। उनके लिये तो दोनों ही एक से ज़्यादा एक प्यारे थे। राजा और रानी तो बस डर के मारे अपने दिल ही दिल में परेशान हो रहे थे कि वे करें तो क्या करें।

और जहॉ तक राजकुमारों का सवाल था दोनों ही यह कह रहे थे कि "मैं जाऊॅगा, मैं जाऊॅगा।"

छोटे राजकुमार ने बड़े भाई से कहा — "तुम मुझसे बड़े हो, चाहे कुछ मिनट ही बड़े हो इसलिये तुम पिता जी के वारिस हो। इसलिये तुम घर पर रहो। मैं इस सन्यासी के साथ जाऊॅगा।"

इस पर बड़े राजकुमार ने छोटे राजकुमार से कहा — "तुम मुझसे छोटे हो तुम मॉ की खुशी हो इसलिये तुम घर पर रहो मैं सन्यासी के साथ जाऊॅगा।"

काफी देर की बहस के बाद, काफी देर तक रोने धोने के बाद, रानी के रो रो कर अपने कपड़े भिगो लेने के बाद बड़े राजकुमार को सन्यासी के साथ भेज दिया गया।

पर महल छोड़ने से पहले बड़े राजकुमार ने महल के आँगन में एक पेड़ लगाया और अपने माता पिता और भाई से कहा — "यह पेड़ मेरी ज़िन्दगी है। जब तक तुम लोग यह देखो कि यह पेड़ ताजा और हरा है तो समझना कि में बिल्कुल ठीक हूँ।

पर जब तुम लोग यह देखो कि यह पेड़ कहीं कहीं से सूख रहा है तो समझना कि मैं किसी मुसीबत में फँस गया हूँ। और जब तुम देखो कि यह सारा पेड़ सूख गया है तो समझना कि मैं मर गया हूँ और अब इस दुनियाँ से चला गया हूँ।"

यह कह कर उसने अपने माता पिता को और अपने भाई को गले लगाया और उस सन्यासी के साथ चला गया।

जब सन्यासी और राजकुमार जंगल की तरफ जा रहे थे तो उन्होंने सड़क पर कुछ पिल्ले[9] घूमते देखे। एक पिल्ले ने अपनी माँ से कहा — "माँ मैं उस सुन्दर नौजवान आदमी के साथ जाना चाहता हूँ। वह मुझे एक राजकुमार लगता है।"

माँ ने कहा — "जाओ बेटा।"

[9] Translated for the word "Whelp". This means puppies also.

राजकुमार ने ख़ुशी से उसको अपना साथी बना लिया और आगे चल दिया। वे लोग कुछ दूर ही चले होंगे कि सड़क के पास लगे एक पेड़ पर उन्होंने एक बाज़[10] बैठा देखा। उसके साथ उसके बच्चे भी बैठे हुए थे।

उनमें से एक बच्चे ने अपनी माँ से कहा — "माँ मैं उस सुन्दर नौजवान आदमी के साथ जाना चाहता हूँ। वह मुझे एक राजकुमार लगता है।"

उसकी माँ ने भी कहा — "जाओ बेटा।"

और राजकुमार ने उसको भी ख़ुशी ख़ुशी अपने साथ ले लिया। इस तरह से सन्यासी, राजकुमार, पिल्ला और बाज़ सब एक साथ अपनी यात्रा पर चल दिये।

अब वे एक जंगल में आ पहुँचे थे जो बस्ती के बाहर था। जहाँ वे एक फूस की छत पड़ी हुई झोंपड़ी के पास आ कर रुक गये। यह सन्यासी के रहने की जगह थी।

यहाँ आ कर सन्यासी ने राजकुमार से कहा — "तुम यहाँ इस झोंपड़ी में मेरे साथ रहोगे। तुम्हारा काम होगा जंगल से मेरी पूजा के लिये फूल चुन कर लाना।

इसके अलावा तुम सिवाय उत्तर दिशा के और कहीं भी जा सकते हो। पर अगर तुम उत्तर दिशा की तरफ गये तो सोच लेना

---

[10] Translated for the word "Hawk" – see ts picture above.

वहॉ तुम्हारी जान को खतरा है। तुम कोई सा भी फूल या फल खा सकते हो और पीने का पानी तुमको एक झरने से मिलेगा।”

राजकुमार को न तो वह जगह ही नापसन्द लगी और न ही अपना काम। वह सुबह ही जंगल से फूल चुनने चला जाता वहॉ से फूल ला कर सन्यासी को दे देता। उसके बाद सन्यासी दिन भर के लिये कहीं चला जाता और फिर शाम ढले तक ही लौटता।

इस तरह राजकुमार के पास सारा दिन का समय केवल अपने लिये ही होता। वह अपने दोनों साथियों पिल्ले और चील बच्चे के साथ जंगल में घूमता रहता।

वह अपने तीर से हिरन मारता जो वहॉ पर बहुत सारे थे और इस तरह से अपने समय का सबसे अच्छा इस्तेमाल करता। एक बार उसने अपने तीर से एक बारहसिंगा मारा तो वह घायल हो कर उत्तर की तरफ भाग लिया।

उस समय राजकुमार को सन्यासी की बात याद नहीं रही और वह भी उस बारहसिंगे के पीछे पीछे उत्तर की तरफ चल दिया। थोड़ी देर में ही बारहसिंगा एक बहुत सुन्दर घर में घुस गया जो वहीं पास में ही था।

उस बारहसिंगे के पीछे पीछे राजकुमार भी उस घर में घुस गया पर वहॉ उसको वह बारहसिंगा दिखायी देने की बजाय एक बहुत ही

सुन्दर लड़की दिखायी दे गयी। वह दरवाजे के पास ही बैठी थी और उसके सामने पॉसे के खेल[11] की एक मेज लगी हुई थी।

राजकुमार तो उस लड़की की सुन्दरता को देखता हुआ उसी जगह चिपक गया।

लड़की ने कहा — "आओ ओ अजनबी आओ। तुम्हारी किस्मत तुम्हें यहॉ खींच लायी है पर तुम मेरे साथ एक बाज़ी खेले बिना नहीं जाना।"

राजकुमार मान गया। अब वह खेल तो पॉसे का था तो यह निश्चय हुआ कि अगर राजकुमार हार गया तो वह उस लड़की को अपना बाज़ दे देगा। और अगर वह लड़की हारी तो वह भी राजकुमार के बाज़ जैसा बाज़ उसको दे देगी।

बाज़ी खेली गयी और वह लड़की जीत गयी। उसने राजकुमार का बाज़ ले लिया और एक तख्ते से ढके हुए गड्ढे में रख दिया। राजकुमार ने एक और बाज़ी खेलने के लिये कहा तो लड़की राजी हो गयी।

अबकी बार की शर्त भी कुछ वैसी ही थी कि अगर लड़की जीत गयी तो राजकुमार उसको अपना पिल्ला दे देगा और अगर राजकुमार जीत गया तो वह लड़की उसको वैसा ही एक पिल्ला दे देगी।

[11] Dice Game table

वह लड़की फिर से वह बाज़ी जीत गयी तो राजकुमार ने अपना पिल्ला उसको दे दिया। उस लड़की ने वह पिल्ला ले कर एक तख्ते से ढके एक दूसरे गड्ढे में रख दिया।

राजकुमार ने फिर यानी तीसरी बार खेल खेलने के लिये कहा तो लड़की ने फिर से हॉ कर दी।

इस बार शर्त यह थी कि अगर राजकुमार अबकी बार हार गया तो वह अपने आपको उस लड़की को सौंप देगा और फिर वह लड़की उसके साथ कुछ भी करे। और अगर लड़की हार गयी तो वह राजकुमार को उसके जैसा ही एक नौजवान दे देगी।

खेल शुरू हुआ और लड़की एक बार फिर जीत गयी। उसने राजकुमार को पकड़ लिया और उसको एक तीसरे तख्ते से ढके गड्ढे में बन्द कर दिया।

यह सुन्दर लड़की कोई लड़की नहीं थी बल्कि एक राक्षसी थी जो आदमी का मॉस खा कर ज़िन्दा रहती थी।

असल में जैसे ही उसने राजकुमार का कोमल शरीर देखा तो उसके मुॅह में पानी भर आया पर क्योंकि उस दिन वह खाना खा चुकी थी इसलिये उसने राजकुमार वाला खाना अगले दिन के लिये रख दिया था।

अब जैसे ही यह सब यहॉ हुआ तो राजकुमार के घर में रोना पीटना मच गया। क्यों?

तुम्हें याद होगा कि जब राजकुमार ने महल छोड़ा था तो वह महल के आँगन में अपनी ज़िन्दगी का एक पेड़ लगा आया था। और सबसे कह आया था कि वह पेड़ अगर हरा भरा और ताजा है तो वह ठीक ठाक है नहीं तो... ।

सो बड़े राजकुमार का छोटा भाई रोज अपने बड़े भाई के अपने हाथ से लगाये गये पेड़ को देखता था कि वह हरा भरा और ताजा दिखायी देता है कि नहीं। अब तक उस पेड़ की पत्तियाँ सब हरी भरी और ताजा थीं।

पर उस दिन जिस दिन राजकुमार के साथ यह घटना घटी उसने देखा कि उस पेड़ की कुछ पत्तियाँ कुछ मुरझायी सी हो रही थीं। उसने यह बात राजा और रानी को बतायी कि किस तरह से उस पेड़ की पत्तियाँ मुरझा रही थीं।

उन्होंने इसका यह मतलब निकाला कि बड़े राजकुमार की ज़िन्दगी खतरे में थी। सो छोटे राजकुमार ने यह तय किया कि वह अपने बड़े भाई की सहायता के लिये जायेगा।

उसने भी जाने से पहले महल के आँगन में अपने बड़े भाई के लगाये जैसा ही एक पेड़ लगाया जो उसकी अपनी ज़िन्दगी का पेड़ था। उसने राजा की घुड़साल से सबसे तेज़ दौड़ने वाला एक घोड़ा लिया और जंगल की तरफ चल दिया।

रास्ते में उसको भी एक कुत्ते के साथ एक पिल्ला मिला। उस पिल्ले ने सोचा कि शायद यह वही सवार है जो उसके साथी पिल्ले

को ले गया था क्योंकि जुड़वाँ होने की वजह से वे दोनों राजकुमार एक जैसे ही लगते थे।

वह पिल्ला उससे बोला — "जैसे तुम मेरे भाई को ले गये थे ऐसे ही तुम मुझे भी अपने साथ ले चलो।"

छोटे राजकुमार ने सोचा कि शायद मेरा भाई यहाँ से एक पिल्ले को ले गया होगा सो उसने भी उस पिल्ले को अपने साथ ले लिया।

वह आगे चला तो उसको एक पेड़ पर बैठा हुआ एक बाज़ मिला। वह भी उस राजकुमार से बोला — "तुम मेरे भाई को ले गये थे इसी तरह से तुम मुझे भी ले चलो। मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ।"

राजकुमार ने सोचा कि शायद मेरा बड़ा भाई इसके भाई को अपने साथ ले गया होगा सो उसने भी उसको अपने साथ ले लिया।

अपने इन साथियों के साथ अब वह बीच जंगल में पहुँच गया। वहाँ उसने एक झोंपड़ी देखी जिसको देख कर उसको लगा कि शायद वह झोंपड़ी उसी सन्यासी की ही होगी जो उसके भाई को ले गया था। पर न तो वहाँ सन्यासी ही था और न उसका भाई ही।

अब उसकी यही समझ में नहीं आ रहा था कि वह वहाँ से कहाँ जाये और क्या करे। वह अपने घोड़े से उतर गया और उसको वहाँ चरने के लिये छोड़ दिया और वह खुद उस झोंपड़ी में बैठ गया।

शाम को वह सन्यासी घर लौटा तो छोटे राजकुमार को देख कर उससे बोला — "मुझे तुम्हें यहाँ देख कर बहुत खुशी हुई राजकुमार। मैंने तुम्हारे भाई को मना किया था कि उत्तर की तरफ

कभी मत जाना क्योंकि उधर की तरफ जाने से उसको खतरा हो सकता था पर लगता है कि उसने मेरा कहा नहीं माना नहीं और वह उधर ही की तरफ चला गया। वहाँ एक राक्षसी रहती है लगता है कि वह उसके फन्दे में फँस गया है।

उसको वहाँ से बचा कर लाने की कोई उम्मीद नहीं है। हो सकता है कि वह उसको अब तक खा भी गयी होगी।"

यह सुन कर छोटा राजकुमार तुरन्त ही उत्तर की तरफ चल दिया। उधर की तरफ जाने पर उसके एक हिरन मिला जिसको उसने अपना तीर मारा तो वह पास में बने एक घर में घुस गया।

वह भी उसके पीछे पीछे उस घर में घुस गया। उसको ज़रा भी आश्चर्य नहीं हुआ जब उसने हिरन की जगह वहाँ एक बहुत सुन्दर लड़की को बैठे देखा।

उसको तुरन्त ही याद आ गया जो उस सन्यासी ने उससे कहा था कि वह लड़की लड़की नहीं बल्कि एक राक्षसी थी और उसी के कब्जे में उसका भाई था।

उस लड़की ने उससे भी पाँसे का एक खेल खेलने के लिये कहा। उसने उसकी प्रार्थना स्वीकार कर ली। वे लोग भी उसी शर्त पर अपनी बाजी खेले जिस पर बड़ा राजकुमार खेला था।

पर इस खेल में छोटा राजकुमार जीत गया तो उस लड़की ने वह पहले वाला बाज़ गड्ढे में से निकाल कर उसको दे दिया। दोनों बाज़ आपस में मिल कर बहुत खुश थे।

उस लड़की और छोटे राजकुमार ने दूसरी बाज़ी खेली तो छोटा राजकुमार फिर जीत गया। इस बार लडकी ने गड्ढे में से निकाल कर पहला वाला पिल्ला उसको दे दिया। यह पिल्ला भी अपने भाई को देख कर बहुत खुश हुआ।

वे तीसरी बार खेले तो छोटा राजकुमार फिर से जीत गया। लड़की ने वायदा किया था कि अगर राजकुमार जीतेगा तो वह उसको उस जैसा ही राजकुमार देगी पर उसने बहाना बनाया कि उसके लिये वैसा राजकुमार लाना तो नामुमकिन था।

पर छोटा राजकुमार उससे अपनी शर्त मनवाने पर अड़ा रहा। सो उसने उसका भाई उसको गड्ढे में से निकाल कर ला कर दिया। दोनों भाई एक दूसरे से मिल कर बहुत खुश हुए।

राक्षसी ने उन दोनों राजकुमारों से कहा — "मुझे मत मारना। मैं तुमको एक भेद की बात बताती हूँ जिससे तुम्हारे बड़े भाई की जान बच जायेगी।"

तब उसने उन दोनों को बताया कि वह सन्यासी माँ काली का बहुत बड़ा भक्त था। माँ काली का मन्दिर वहीं पास में था।

वह सन्यासी उस समूह का था जिसमें लोग मरे हुओं की आत्मा से मिल कर सम्पूर्णता[12] को हासिल करते हैं। वह काली की वेदी पर अब तक छह लोगों की बलि दे चुका है जिनकी खोपड़ियाँ मन्दिर की आलमारी में देखी जा सकती हैं।

---

[12] Translated for the word "Perfection".

जब वह सातवीं बलि दे देगा तब वह सम्पूर्ण हो जायेगा। और यह सातवीं बलि बड़े राजकुमार की होगी।"

राक्षसी ने आगे कहा — "तुम तुरन्त ही काली के मन्दिर चले जाओ और वहाँ जा कर सच का पता करो कि मैंने जो कुछ तुमसे कहा है वह सच है कि नहीं।"

सो दोनों भाई काली के मन्दिर गये। जब बड़ा राजकुमार मन्दिर में घुसा तो वहाँ रखी खोपड़ियाँ एक बहुत ही भयानक हँसी हँसीं।

वह भयानक दृश्य देख कर और इस भयानक हँसी की आवाज सुन कर दोनों भाई डर गये और उनसे इस हँसी की वजह पूछी। खोपड़ियाँ बोलीं कि वे इसलिये हँसीं क्योंकि वे बहुत खुश थीं कि उनका एक और साथी आ गया।

उनमें से एक खोपड़ी सबकी तरफ से बोली — "ओ नौजवान राजकुमार, कुछ ही दिनों में इस सन्यासी की पूजा खत्म हो जायेगी। फिर तुम इस मन्दिर में लाये जाओगे और तुम्हारा सिर काट दिया जायेगा। फिर तुम हमारे साथ ही रहोगे।

पर एक तरीका है जिससे तुम भी अपनी इस तरह की बदकिस्मती से बच सकते हो और साथ में हमारा भी भला कर सकते हो।"

राजकुमार ने कहा — "मेहरबानी करके मुझे वह तरीका बताइये। मैं वायदा करता हूँ कि मुझसे आप सबके लिये जो कुछ भी अच्छा होगा वह मैं करूँगा।"

खोपड़ी बोली — "जब वह सन्यासी तुम्हारी बलि देने के लिये तुम्हें इस मन्दिर में ले कर आयेगा तो वह तुमसे मॉ काली के सामने जमीन पर लेट कर उसकी मूर्ति को सिर झुकाने के लिये कहेगा और फिर जब तुम काली मॉ के सामने लेट जाओगे तब वह तुम्हारा गला काट देगा।

पर तुम हमारी सलाह मानोगे तो तुम बच सकते हो। जब वह तुमसे मॉ काली के सामने सिर झुकाने के लिये कहे तो तुम उससे कहना कि क्योंकि तुम एक राजकुमार हो इसलिये तुमने कभी किसी के सामने सिर नहीं झुकाया। तुम जानते ही नहीं कि सिर झुकाना क्या होता है।

तुम फिर उस सन्यासी से कहना कि वह तुम्हें तुम्हारे सामने ही मॉ काली के सामने सिर झुका कर बताये कि सिर कैसे झुकाते हैं। और जब वह तुमको सिर झुका कर बताये तब तुम अपनी तलवार से उसका सिर उसके धड़ से अलग कर देना।

जैसे ही तुम उसको मारोगे तो हम सब ज़िन्दा हो जायेंगे क्योंकि सन्यासी की पूजा अधूरी रह जायेगी।"

बड़े राजकुमार ने उन खोपड़ियों को उनकी इस सलाह के लिये बहुत बहुत धन्यवाद दिया और अपने छोटे भाई को साथ ले कर सन्यासी की झोंपड़ी में वापस चला गया।

कुछ दिन बाद सन्यासी की पूजा खत्म हो गयी। अगले दिन उसने बड़े राजकुमार से कहा कि वह उसके साथ काली मॉ के मन्दिर

चले। वह वहाँ क्यों चले यह उसने नहीं बताया पर राजकुमार को पता था कि वह उसको वहाँ उसकी बलि चढ़ाने के लिये ही ले कर जा रहा है।

छोटा राजकुमार भी उनके साथ गया पर उसको मन्दिर के अन्दर जाने की इजाज़त नहीं थी।

सन्यासी काली के सामने जा कर खड़ा हो गया और बड़े राजकुमार से बोला — "काली माँ के सामने सिर झुकाओ।"

राजकुमार बोला — "मैं तो राजकुमार हूँ। राजकुमार होने के नाते मैंने कभी किसी के सामने सिर नहीं झुकाया। मुझे नहीं मालूम कि किसी के सामने सिर कैसे झुकाया जाता है। पहले मुझे आप अपना सिर झुका कर दिखाइये तब मैं खुशी से अपना सिर झुका पाऊँगा।"

यह सुन कर सन्यासी ने कहा देखो सिर ऐसे झुकाते हैं और वह काली माँ की मूर्ति के सामने सिर झुका कर लेट गया।

और जब उसने ऐसा किया तो राजकुमार ने तुरन्त ही अपनी तलवार से उसका सिर उसके धड़ से अलग कर दिया।

तुरन्त ही वे सब खोपड़ियाँ बहुत ज़ोर से हँस पड़ीं। काली माँ भी राजकुमार पर बहुत खुश हो गयीं और उसको सम्पूर्णता का वरदान दिया जिसके लिये वह सन्यासी इतने दिनों से कोशिश कर रहा था।

सब खोपड़ियाँ अपने अपने शरीरों से जा कर मिल गयीं और ज़िन्दा हो गयीं और दोनों राजकुमार सकुशल अपने देश लौट गये।

3 राजकुमार[13]

यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के जियोर्जिया देश में कही सुनी जाती है। इस लोक कथा में कोई आदमी जाते समय कोई पेड़ तो नहीं बोता है पर वह अपने पीछे पानी छोड़ जाता है और कह जाता है कि जब भी यह पानी खून में बदल जाये तो समझना कि मैं मर गया।

एक बार की बात है कि एक जगह एक राजा था जिसके पास बहुत कुछ था। पर उसकी पत्नी के कोई बच्चा नहीं था इसलिये वह बहुत दुखी रहता था।

एक दिन वह बहुत उदास बैठा था कि एक दरबारी उसके पास आया और बोला — "ओ ताकतवर योर मैजेस्टी, आपके कोई बेटा नहीं है और आपने किसी को कुछ दिया भी नहीं है। तो आपकी प्रजा आपके बारे में क्या सोचेगी। आपने जो इतनी धन दौलत इकट्ठी कर रखी है आप इसका क्या करेंगे।"

अपने दरबारी के यह शब्द राजा के दिल को लग गये। उसने सोचा यह दरबारी कहता तो ठीक ही है मेरी इतनी सारी धन दौलत का क्या होगा। सो उसने अगले दिन ही अपनी प्रजा के लिये एक

---

[13] The Prince (Tale No 10) – a folktale from Georgia, Europe.
Adapted from the Web Site :
http://www.archive.org/stream/cu31924029936006#page/n19/mode/2up

बहुत बड़ी दावत का इन्तजाम किया और उसमें उसने खूब दान दिया।

उसी समय न जाने कहाँ से एक बुढ़िया वहाँ आयी। वह राजा के पास आयी और बोली — "अगर मैं तुम्हें एक बेटा दूँ तो तुम मुझे क्या दोगे।"

राजा बोला — "जो तुम माँगोगी मैं तुम्हें वही दूँगा।"

इस पर बुढ़िया ने अपनी जेब से एक सेब निकाला उसे तीन हिस्सों में काटा और राजा को देते हुए बोली — "इसको अपनी पत्नी को खाने के लिये दे देना। इससे उसको तीन बच्चे होंगे। पर याद रखना कि मैं सात साल बाद आऊँगी तब तुम मुझे अपने उन तीनों बेटों में से सबसे छोटा बेटा मुझे दे देना।"

राजा ने हामी भर दी। वह सेब उसने अपनी रानी को खाने के लिये दे दिया और रानी ने उसे खा लिया। समय आने पर रानी ने तीन बेटों को जन्म दिया। उनका सबसे छोटा बेटा सबसे ज़्यादा सुन्दर था।

राजा जब अपने तीनों बेटों के देखता तो वह तो यह सोच भी नहीं सकता कि वह अपने सबसे छोटे बेटे को किसी को दे देगा।

उसने अपने मन में सोचा "मैं अपने इस बेटे को नौ तालों में बन्द करके रखूँगा। और जब वह बुढ़िया आयेगी तब मैं उससे कह दूँगा कि मेरा सबसे छोटा बेटा मर गया। पर वह मेरे दोनों बड़े बेटे ले जाना चाहे तो ले जा सकती है।"

सात साल जाते कितनी देर लगती है। सात साल हवा की तरह से उड़ गये। और सात साल बाद वह बुढ़िया राजा के दरवाजे पर खड़ी थी। उसने राजा का सबसे छोटा बेटा माँगा।

राजा ने वैसा ही किया जैसा उसने सोचा था। उसने अपने सबसे छोटे बेटे को नौ तालों में बन्द कर दिया और बुढ़िया से कहा — "मेरा सबसे छोटा बेटा तो मर गया है पर मेरे ये दोनों बड़े बेटे यहाँ है तुम इन्हें ले जाओ।"

अब वह बुढ़िया तो उसका विश्वास ही न करे। उसने उसके छोटे बेटे को ढूँढने के लिये महल का हर कोना छाना नौ ताले भी खोले और राजा के सबसे छोटे बेटे को ले गयी। वह उसको अपने साथ ले कर अपने घर चली गयी।

कुछ दूर जाने पर वे एक नदी के पास आये जहाँ एक बुढ़िया मैली चादरें आदि धो रही थी। जब उसने सुन्दर राजकुमार को देखा तो उसको पुकारा और दुखी हो कर कहा — "क्या तुझे मालूम है कि तू अपनी बदकिस्मती की तरफ ले जाया जा रहा है। तू उस जादूगरनी के पीछे जा ही क्यों रहा है। तू यकीनन उसके हाथों से ज़िन्दा नहीं बच सकता। वह तुझे मार देगी।"

जब राजकुमार ने यह सुना तो वह उस जादूगरनी के पास गया और उससे कहा — "ज़रा में इस बुढ़िया से बात कर लूँ मैं अभी तुम्हारे साथ चलता हूँ।" जादूगरनी ने उसको जाने की इजाज़त दे दी।

राजकुमार अपने घर चला गया एक प्याले में पानी भरा और आग के पास रख दिया। यह करके वह बोला — “जब यह पानी खून में बदल जायेगा तो मैं मर जाऊँगा और अगर यह ऐसे ही साफ रहा तो मैं ज़िन्दा रहूँगा।”

इसके बाद वह वहाँ से चला गया और जा कर उस जादूगरनी से मिल गया फिर दोनों साथ साथ आगे चलने लगे।

चलते चलते वे एक अँधेरी घाटी में पहुँच गये। उसके दोनों तरफ पहाड़ थे। उस जादूगरनी का घर वहीं एक चट्टान की गुफा में था। उसके घर में तीन बेटियाँ थीं दो घोड़े थे एक उसके अपने लिये और एक उसकी बेटियों के लिये। बुढ़िया अन्दर गयी और राजकुमार को अपनी बेटियों को सौंपा और जा कर सो गयी।

अब इस जादूगरनी को सात दिन सात रात तक सोने की आदत थी और उस समय उसको कोई उठा भी नहीं सकता था।

जब उसकी बेटियों ने राजकुमार को देखा तो वह उनको बहुत अच्छा लगा तो उन्होंने आपस में बात की कि यह कितना सुन्दर राजकुमार है इसको मारना ठीक नहीं है। हम इसको अपनी माँ को भी खाने नहीं देंगे। हमें इसकी इसके भाग जाने में सहायता करनी चाहिये।

सब बहिनें एक साथ बोलीं “हाँ हम इसके भाग जाने में इसकी सहायता करेंगे।” और उन्होंने उसको भगा देने का प्लान बनाया।

उनमें से एक ने कहा — “अगर हमारी मॉ तुमको पकड़ ले तो तुम यह कंघा अपने पीछे फेंक देना। इससे तुम्हारे और उनके बीच में एक बहुत ही घना जंगल पैदा हो जायेगा और हमारी मॉ को उसे पार करने में बहुत मुश्किल होगी।”

दूसरी बहिन ने उसको एक कैंची दी और कहा — “जब हमारी मॉ तुमको पकड़ लें तो तुम यह कैंची अपने पीछे फेंक देना तो तुम्हारे और उनके बीच में ऊँची नीची बहुत सख्त चट्टानें खड़ी हो जायेंगी जिनको पार करने में उनको बहुत मुश्किल होगी और तुम इतनी देर में जल्दी से भाग जाना।”

सबसे छोटी बहिन ने उसको नमक का एक डला दिया और कहा — “जब हमारी मॉ तुमको पकड़ लें तो तुम यह नमक का डला अपने पीछे फेंक देना तो तुम दोनों के बीच में एक समुद्र पैदा हो जायेगा जिसे हमारी मॉ पार नहीं कर पायेगी।”

यह सब कह कर उन्होंने उसको जीन कस कर अपना वाला घोड़ा दिया और वह सब भी उसको दिया जो वह चाहता था और वहॉ से उसको भेज दिया। राजकुमार ने भी उनसे वे तीनों चीज़ें लीं घोड़े पर सवार हुआ उन्हें धन्यवाद दिया और अपने घर की तरफ चल दिया।

सात दिन बीत जाने के बाद जादूगरनी जागी तो उसने अपना खाना ढूँढा पर वह तो वहॉ था ही नहीं। वह अपने घोड़े के पास

गयी और उससे पूछा — "पहले हम रोटी खा लें या फिर तुरन्त ही चल दें?"

घोड़े ने जादूगरनी से कहा — "चाहे हम रोटी खायें या न खायें पर हम उसको पकड़ नहीं सकते।"

पर जादूगरनी ने अपना इरादा नहीं छोड़ा। उसने अपनी रोटी खायी घोड़े पर चढ़ी और राजकुमार को ढूँढने चल दी। कुछ दूर जाने के बाद ही उसने राजकुमार को पकड़ लिया।

राजकुमार ने पीछे मुड़ कर देखा और बुढ़िया को अपने पास आते देख कर उसने अपनी जेब से कंघा निकाला और अपने पीछे फेंक दिया। कंघा पीछे फेंकते ही उन दोनों के बीच में इतना घना जंगल पैदा हो गया कि उसमें से एक मक्खी भी नहीं गुजर सकती थी।

बुढ़िया का रास्ता रुक गया था जिससे वह कुछ नाराज सी हो गयी। पर किसी तरह से वह उसको पार कर गयी। जंगल पार करके जब वह खुली जगह में पहुँची तो उसने अपने घोड़े को ऐड़ लगायी और फिर से राजकुमार को पकड़ लिया।

राजकुमार ने फिर बुढ़िया जादूगरनी को आते देखा तो इस बार उसने अपनी कैंची निकाली और अपने पीछे फेंक दी। कैंची पीछे फेंकते ही उन दोनों के बीच में लोहे की तरह सख्त पहाड़ी खड़ी हो गयी। उसे कोई लोहा नहीं काट सकता था।

उसको पार करने में जादूगरनी के घोड़े के खुर कट गये इससे वह और आगे नहीं जा सका और वहीं गिर पड़ा पर वह जादूगरनी भी छोड़ने वाली नहीं थी। वह घोड़े से कूदी और पैदल ही चलने लगी। उसने वह पहाड़ी पार की और मैदान में पहुँच कर फिर जल्दी जल्दी चलने लगी।

वह धरती के ऊपर उड़ी जैसे उसके पंख लगे हों। उड़ कर उसने फिर से राजकुमार को पकड़ लिया। राजकुमार ने देखा कि जादूगरनी तो फिर चली आ रही है तो अबकी बार उसने अपनी जेब से नमक का डला निकाला और अपने पीछे फेंक दिया।

नमक का डला फेंकते ही उन दोनों के बीच एक समुद्र पैदा हो गया इतना बड़ा कि उसको कोई चिड़िया पार नहीं कर सकती थी। बुढ़िया बहुत निडर थी। वह इससे भी नहीं डरी और समुद्र में चल दी। उसका इरादा था कि वह उसको पार कर लेगी पर वह उसमें डूब गयी।

राजकुमार आगे बढ़ता जा रहा था। पर वह अक्सर पीछे भी देख लेता था। उसने देखा कि अब वह बुढ़िया कहीं नहीं थी। यह देख कर वह बहुत खुश हो गया और खुशी खुशी आगे बढ़ता गया। पर उसको यह पता नहीं था कि वह कहाँ जा रहा है।

चलते चलते उसे भूख लग आयी। आखिर उसको एक जगह आग जलती दिखायी दी। वह वहाँ गया तो उसने देखा कि वहाँ तो एक बहुत बड़ी आग जल रही है और उसके ऊपर शराब की एक

केटली थी और खाना बन रहा था। उसके चारों तरफ नौ देवियाँ[14] लेटे हुए थे। ये सब आपस में भाई थे।

वे सब बहुत ज़ोर से सो रहे थे। पर उनमें एक लंगड़ा देवी भी था जो इन सबको देख रहा था। राजकुमार ने देवियों से इजाज़त लेने का इन्तजार नहीं किया वह तो बस आया आग के ऊपर से बरतन उठाया उसमें से खाना खा कर उसको फिर से आग पर रख दिया और फिर वह भी वहीं लेट गया और खर्राटे मारने लगा।

लॅगड़ा देवी आश्चर्य से दूर से यह आश्चर्य से देख रहा था।

कुछ देर बाद एक देवी उठा। उसने इधर उधर देखा तो देखा कि वहाँ तो एक आदमी सो रहा है। उसको देख कर उसने खुशी से कहा — "आहा आज तो यह हमारे लिये बहुत अच्छा खाना है।" कह कर वह उस लड़के की तरफ चल दिया।

पर लंगड़ा देवी बोला — "तुम उसको छोड़ दो। उसको तुम छूना भी नहीं। हमें उसको डराना है। उसने आग पर से हमारा बरतन उठा कर उसमें से खाना खाया है और खाना खा कर फिर से उसे आग पर रख दिया है। उसने वह किया है जो हम दस लोगों के लिये भी करना मुश्किल है।"

देवी ने सोचा यह तो यह ठीक कह रहा है और वहाँ से चला गया। एक और देवी उठा और उसने भी यही करना चाहा जो पहले वाला करना चाह रहा था पर लंगड़े देवी ने उसको भी रोक दिया।

[14] Devi seems like some demon type of beings.

इसी तरह से सारे देवी उठे और उन सबने वही करना चाहा जो पहले वाले देवी ने करना चाहा था पर लंगड़े देवी ने सबको रोक दिया।

जब सारे देवी उठ गये तब सबने खाना शुरू कर दिया। उसी समय राजकुमार भी उठा। वह देवियों के पास आया और उनसे उससे भाईचारे के लिये प्रार्थना की।

देवियों ने पूछा — "तुम कौन हो जो इतनी हिम्मत वाले हो। और तुम यहाँ क्यों आये हो।"

राजकुमार बोला — "मैं तो भूखा था। मैंने आग देखी सो मैं इधर चला आया।"

देवियाँ बोले — "अगर तुम यह चाहते हो कि हम तुम्हारे साथ भाईचारे की कसम खायें तो पहले तुम वहाँ तक जाओ जहाँ तुम्हें एक चौराहा मिलेगा। वहाँ तुमको एक लड़की रूमाल बिछाये मिलेगी। अगर तुम उसका रूमाल हमें ला कर दे दो तब हम तुम्हारे साथ भाईचारे की कसम खा सकते हैं।

और अगर तुम उसका वह रूमाल नहीं ला सके तो फिर हमारा तुम्हारा कोई सम्बन्ध नहीं। बहुत सारे लोगों ने उस लड़की का वह रूमाल लेने की कोशिश की है पर वे ले नहीं पाये। वह लड़की उनको हमेशा ही मार देती है।"

देवियों ने सोचा कि इस तरह से यह राजकुमार भी मारा जायेगा और इस तरह से वे उससे छुटकारा पा जायेंगे।

राजकुमार चल दिया और एक चौराहे पर आया और लो वहाँ तो एक बहुत सुन्दर लड़की उड़ कर नीचे आयी। एक रूमाल उसके आगे आगे फैला हुआ आ रहा था इससे वह लड़की को देख नहीं पा रहा था।

राजकुमार उसके सामने आया और उसने वह रूमाल पकड़ लिया। पर जैसे ही वह रूमाल ले कर जाने वाला था कि उस लड़की ने उसके ऊपर हमला किया। राजकुमार उस लड़ाई में जीत गया। लड़ाई में राजकुमार के हाथ में उस लड़की का एक सुनहरा जूता रह गया।

वह लड़की का रूमाल ले कर देवियों के पास आया और उनको उसका सुनहरा जूता दे कर कहा — "आप लोग शहर जायें वहाँ इसको बेच कर मुझे इसके पैसे ला कर दें।"

देवियों ने लंगड़े देवी को वह सुनहरा जूता दे कर शहर भेज दिया। शहर जा कर वह एक सौदागर से मिला और उसे वह जूता दिखाया।

उस जूते को देख कर वह सौदागर बोला — "मेरी पत्नी के पास ऐसे ही सुनहरी जूते हैं। ऐसा लगता है कि तुमने उसका जूता चुरा लिया है।"

लंगड़ा देवी कसम खा कर बोला — "नहीं हमने यह जूता चुराया नहीं है हमने तो यह जूता पाया है।"

पर उस सौदागर को उसकी बात पर पर विश्वास ही नहीं हुआ। उसने देवी से वह जूता ले लिया और उसे ताले में बन्द कर दिया।

दूसरे देवियों ने उसका बहुत देर तक इन्तजार किया पर जब वह नहीं आया तो उन्होंने अपने नवें भाई को उसे ढूँढने भेजा। जब वह शहर में पहुँचा जहाँ लंगड़ा देवी जूता बेचने गया था तो वहाँ जा कर उसने अपने लंगड़े भाई के बारे में पूछताछ की।

उसको लंगड़े देवी के बारे पूछताछ करते देख कर उन्होंने सोचा यह आदमी यकीनन उस चोर का साथी होगा। यह सोच कर उन्होंने उसको भी ताले में बन्द कर दिया।

बचे हुए देवियों ने अपने नवें भाई का इन्तजार किया और जब उन्होंने देखा कि वह भी लौट कर नहीं आया तो उन्होंने अपने आठवें भाई को भेजा। उन लोगों ने उसको भी ताले में बन्द कर दिया। फिर सातवाँ गया फिर छठा गया इस तरह सभी भाई वहाँ गये पर सबको ताले में बन्द कर दिया गया।

जब सब देवियाँ ताले में बन्द हो गये और कोई वापस लौट कर नहीं आया तो राजकुमार ने सोचा "ऐसा सबके साथ क्या हो सकता है कि कोई भी वापस लौट कर नहीं आया। मैं जाता हूँ और मैं ढूँढता हूँ उनको। हो सकता है कि मुझे पता चल जाये कि वे किस मुसीबत में फँस गये हैं।"

ऐसा सोच कर वह उठा और शहर की तरफ चल दिया। वहाँ जा कर उसने भी लंगड़े देवी के बारे में पूछताछ की। जब सौदागर को पता चला कि फिर कोई लंगड़े देवी को पूछता चला आ रहा है तो उसने उसको भी पकड़ना चाहा।

पर राजकुमार बोला — "अगर मैं अपने सुनहरे जूते का दूसरा जूता नहीं पाऊँगा तो आप मुझे झूठा कह सकते हैं और फिर आप मेरे और देवियों के साथ जो कुछ करना चाहें वह कर सकते हैं।

पर अगर वह मुझे मिल गया और आप लोगों ने झूठ बोला तो फिर जो हम आपके साथ करना चाहेंगे वह करेंगे।"

सौदागर बोला "ठीक है।"

सो राजकुमार उस सुनहरी जूते का दूसरा जूता देखने के लिये चल दिया। वह बहुत दूर तक गया और एक ऐसे राज्य में आया जो समुद्र के किनारे था। इस राज्य पर एक सूरज जैसी चमकती लड़की राज करती थी।

जो भी उस राज्य में गेंहू बेचने जाता था उसको उस लड़की से मिलना पड़ता था। वह लड़की उस गेंहू को और उस गेंहू के लाने वाले दोनों को समुद्र में फिंकवा देती थी और वहाँ से कोई बच नहीं सकता था।

जब राजकुमार ने यह सुना तो उसने सोचा कि वह इस देश में गेंहू ले कर आयेगा और देखेगा कि वह लड़की उसके साथ क्या

करती है। वह गेंहू लाने गया और गेंहू से एक नाव भर कर उस राज्य को लौटा।

जब वह समुद्र के किनारे के पास आया तो न जाने कहाँ से एक सुन्दर लड़की वहाँ आयी। उसने अपना हाथ फैलाया और वह गेंहू वाली नाव डुबोने को थी कि राजकुमार ने नाव में अपना पैर मारा जिससे वह नाव हिल गयी और नाव डूबने से बच गयी।

फिर उसने उस लड़की का हाथ पकड़ लिया और उसको अपनी तरफ खींचा। यह देख कर कि उसकी कोशिश बेकार कर दी गयी है उस लड़की ने अपनी पूरी ताकत लगा कर अपने आपको उससे खींचा। वह तो उसके हाथ से निकल आयी पर उसकी अँगूठी राजकुमार के हाथ में रह गयी।

इस तरह से उसने उस लड़की को हरा दिया था। इसके बाद अब जो भी वहाँ गेंहू लाना चाहता था ला सकता था और उस राज्य में अब बहुत सारा गेंहू था।

उस देश के लोग राजकुमार के पैरों पर गिर पड़े और उसके घुटनों को चूमा। उन्होंने उससे प्रार्थना की कि वह उनका राजा बन जाये। पर वह तो उनका राजा बनने वाला नहीं था।

उसने कहा — "मैं तो यहाँ किसी दूसरे काम से आया हूँ। असल में तो मुझे केवल एक खास जूते की तलाश है और मुझे कुछ नहीं चाहिये।" और फिर उसने उनको अपनी कहानी बता दी।

वहाँ उसको वह जूता नहीं मिला तो वह उस राज्य को छोड़ कर फिर आगे चला और एक दूसरे देश में आया। यहाँ आ कर उसे पता चला कि एक सुन्दर लड़की ने राजा के बेटे को मार दिया है और उसको एक तहखाने में दफ़न कर दिया गया है।

अब हर रात वह लड़की वहाँ आती है और उसको डंडियों से मारती है। ऐसा करने से वह राजा का बेटा फिर से ज़िन्दा हो जाता है। उसके बाद वे दोनों खाना खाते हैं और सुबह तक का समय आनन्द से गुजारते हैं।

सुबह को वह उसे फिर डंडे से मारती है जिससे वह फिर से लाश बन जाता है और वह लड़की वहाँ से उड़ जाती है।

जब राजकुमार ने उस नौजवान की यह कहानी सुनी तो उसने उसकी सहायता करने का फैसला कर लिया। वह उसकी कब्र में घुसा और वहाँ उस लड़की का इन्तजार करने लगा।

कुछ ही देर में वह लड़की वहाँ उड़ती हुई आयी। उसने अपनी जेब से डंडियाँ निकालीं और उनसे राजा के बेटे को मारती रही जब तक वह ज़िन्दा नहीं हो गया।

फिर उन्होंने खाना खाया और रात भर आनन्द मनाते रहे। सुबह होने पर जैसे ही वह लड़की उसको डंडियों से मारने वाली थी कि हमारे राजकुमार ने उसके हाथ से डंडियाँ छीन लीं। इस तरह से वह राजा के बेटे को डंडिया नहीं मार पायी और वह ज़िन्दा रहा।

राजकुमार उसको फिर उसके पिता के पास ले गया। राजा अपने बेटे को ज़िन्दा पा कर बहुत खुश हुआ और राजकुमार को अपना राज्य देने के लिये कहा पर वह राजा बनना नहीं चाहता था।

उसने कहा — "मैं एक खास सुनहरे जूते की तलाश में हूँ अगर मुझे वह मिल जाये तो मैं खुश हूँ। मुझे उसे ढूँढना है इसलिये मैं चलता हूँ।" कह कर वह वहाँ से चल दिया।

कुछ दूर चलने के बाद वह एक खुले मैदान में आ गया। वहाँ उसने एक बहुत सुन्दर घर देखा। उसको देख कर उसने सोचा "पता नहीं यहाँ कौन रहता होगा।" और वह उस घर की तरफ चल दिया।

रास्ते में उसको एक अरब कुछ खच्चरों को खाना खिलाता दिखायी दिया। उसने उससे पूछा — "भाई क्या तुम जानते हो कि यह घर किसका है। यहाँ कौन रहता है।"

अरब ने इधर उधर देखा और बोला — "मैं तुम्हारा सिर पहले खाऊँ या पैर पहले खाऊँ।"

राजकुमार बोला — "मैंने तो तुमसे इस घर के बारे में पूछा था तो तुम उसका जवाब क्यों नहीं देते।"

अरब ने फिर चारों तरफ देखा और बोला — "मैं तुम्हें सिर से खाऊँ या फिर पैर से।"

राजकुमार फिर बोला — "जहाँ तक खाने का सवाल है मैं तुम्हें अभी बताता हूँ कि मैं क्या करने वाला हूँ।" कह कर राजकुमार ने

अरब को इतनी ज़ोर से मारा कि वह नौ पहाड़ के दूसरी तरफ जा कर पड़ा। फिर उसने खच्चरों को मारा और घर आया।

वह उस घर के चारों तरफ घूमता रहा और उसको देख कर बहुत खुश हुआ। फिर वह खिड़की से हो कर घर में घुसा और उसके सब कमरे देख आया। इन कमरों में से एक कमरे में एक सोने का सिंहासन रखा था और उस पर रखे थे सोने के जूते जैसे कि वह ढूँढ रहा था।

उसने अपने मन में सोचा "शायद यह उसी लड़की का घर है जिसका जूता मेरे पास है। मैं यहाँ इन्तजार करता हूँ और देखता हूँ कि क्या होता है।" वह सिहासन के नीचे छिप कर बैठ गया और इन्तजार करने लगा।

जल्दी ही वहाँ एक बहुत सुन्दर लड़की उड़ती हुई आयी। फिर दूसरी फिर तीसरी और आखीर में वह अरब। वे चारों खाना खाने बैठ गये। पलक झपकते ही अरब ने उन तीनों लड़कियों के लिये कपड़ा बिछा दिया। और जो कुछ जिसकी इच्छा हुई वह सब उसके लिये वहाँ उस कपड़े पर आ कर रखा गया।

कुछ समय बाद सबसे बड़ी बहिन ने अपना शराब का कटोरा उठाया और बोली — "भगवान उस नौजवान को लम्बी उम्र दे जो मुझसे मेरा रूमाल और मेरा सुनहरा जूता ले गया।" यह कह कर उसने वह शराब पी और शराब का कटोरा नीचे रख दिया।

उसके बाद दूसरी बहिन ने अपना शराब का कटोरा उठाया और बोली — "उस नौजवान की लम्बी उम्र के लिये जिसने मेरे हाथ से मेरी अँगूठियाँ छीन लीं और एक राज्य को गेंहूँ दिया।" उसने भी अपने शराब के कटोरे में से शराब पी और कटोरा नीचे रख दिया।

फिर सबसे छोटी बहिन ने अपना शराब का कटोरा उठाया और बोली — "यह जाम उस नौजवान की लम्बी ज़िन्दगी के नाम जिसने मेरे हाथ से डंडियाँ छीनीं और राजा के बेटे को ज़िन्दगी दी।"

उसके बाद अरब ने अपना शराब का प्याला उठाया और बोला — "यह जाम उस नौजवान की लम्बी उम्र के नाम जिसने मुझको इतनी ज़ोर से मारा कि मैं नौ पहाड़ों के उस पार जा कर पड़ा।" कह कर उसने भी उस प्याले में से शराब पी कर अपना प्याला नीचे रख दिया।

यह सुन कर राजकुमार सिंहासन के नीचे से निकला शराब का एक प्याला उठाया और बोला — "मुझे भी यह जाम किसी के नाम में पीना है। यह जाम उस लड़की की लम्बी ज़िन्दगी के नाम जिसका मैंने रूमाल लिया है।" कह कर उसने शराब पी और शराब का प्याला नीचे रख दिया। फिर उसने अपनी जेब से रूमाल निकाला और सबसे बड़ी बहिन को दे दिया।

उसने फिर शराब का प्याला उठाया और बोला — "यह जाम उस लड़की की लम्बी ज़िन्दगी के नाम जिससे मैंने अँगूठियाँ लीं।" कह कर उसने शराब पी और शराब का प्याला नीचे रख दिया।

फिर उसने अपनी जेब से अँगूठियाँ निकालीं और दूसरी बहिन को दे दीं।

उसने फिर अपना शराब का प्याला उठाया और बोला — "यह जाम उस लड़की की लम्बी ज़िन्दगी के नाम जिससे मैंने डंडियाँ लीं।" कह कर उसने शराब पी और शराब का प्याला नीचे रख दिया। फिर उसने अपनी जेब से डंडियाँ निकालीं और तीसरी बहिन को दे दीं।

फिर वह अरब की तरफ घूमा और बोला — "यह जाम उस अरब की लम्बी ज़िन्दगी के नाम जिसको मैंने नौ पहाड़ों के उस पार फेंक दिया था।"

उसके बाद तो तीनों बहिनें कूद पड़ीं कि "यह शादी मुझसे करेगा।" "नहीं नहीं यह शादी मुझसे करेगा।" और उन तीनों ने आपस में लड़ना शुरू कर दिया।

राजकुमार बोला — "तुम लोग आपस में क्यों लड़ती हो। मैं सबसे छोटी लड़की से शादी करूँगा क्योंकि मैं अपने तीन भाइयों में सबसे छोटा हूँ। और तुम दोनों बड़ी बहिनें मेरे दोनों बड़े भाइयों से शादी करना।

लड़कियों ने पूछा — "इधर की तरफ आने का तुम्हारा क्या काम है।"

राजकुमार बोला — "मैं यहाँ दूसरा सुनहरा जूता ढूँढने के लिये आया था पर मुझे तो वह यहीं मिल गया। इस जूते की वजह से नौ

देवी भाई एक शहर में कैद हैं। और अगर मैं इसके बिना वहाँ गया तो मैं भी उनके साथ ही वहाँ कैद हो जाऊँगा।"

बहिनें बोली — "यह जूता तुम्हारा है। इसके अलावा और भी जितने जूते तुम्हें चाहिये तुम ले जा सकते हो। तुम अरब की पीठ पर बैठ जाओ और तुम तीन घंटे में उस शहर में पहुँच जाओगे।"

राजकुमार ने वैसा ही किया जैसा उन बहिनों ने उससे करने के लिये कहा था। उसने सुनहरे जूतों से एक थैला भरा अरब की पीठ पर बैठा और तीन घंटे में वह उस शहर में था।

उसको देख कर देवी लोग बहुत खुश हुए। उन्होंने सौदागर को बुलाया तो वह जूते ले कर आया। उसने एक एक करके अपने सारे जूते निकाले पर उस एक सुनहरी जूते जैसा उनमें से कोई नहीं था। उसके बाद राजकुमार ने अपने थैले में से जूते निकाले तो सौदागर झूठा साबित हुआ। क्योंकि वे सब जूते लंगड़े देवी के जूते जैसे थे।

राजकुमार ने सौदागर को देवियों को सौंप दिया और कहा "इसका तुम लोग जो चाहे वह करो। इसका सब कुछ बेच दो या और जो कुछ भी। पर मुझे इजाज़त दो मुझे अभी अपने रास्ते जाना है।"

जब देवियों ने यह सुना तो उन्होंने राजकुमार को अपने पास रुक जाने के लिये कहा पर वह नहीं माना। वह वहाँ से तीनों बहिनों के पास आया और सबसे छोटी वाली लड़की से शादी कर ली।

तीनों बहिनों ने अरब को एक घोड़े पर टॉगने वाला थैला दिया जिसमें उनके लिये वह सब कुछ था जो उनको सफर के लिये चाहिये था और उसके हाथ में एक पेड़ दिया और कहा — "राजकुमार के पिता के राज्य में जाओ और जब उनके महल के पास फलॉ जगह पहुँचो तो यह पेड़ वहॉ लगा देना।

यह एक बड़े मैदानी पेड़ की तरह बड़ा हो जायेगा। इसके नीचे एक नदी बहेगी। उस नदी के किनारे तुम लोग एक कपड़ा बिछा देना और फिर हमारे आने का इन्तजार करना।"

अरब ने वैसा ही किया जैसा उससे करने के लिये कहा गया था। उसके कपड़ा बिछाते ही लड़कियॉ वहॉ आ गयीं।

राज्य के हर आदमी और स्त्री ने यह सुना तो वह उनको देखने के लिये वहॉ आ गया। राजकुमार के माता पिता अभी भी अपने बेटे के गम में बहुत दुखी थे।

राजकुमार जो पानी से भरा प्याला आग के पास रख कर गया था वह वहॉ अभी तक वैसा का वैसा ही रखा था पर फिर भी वे उसको ज़िन्दा देखने की उम्मीद बिल्कुल छोड़ चुके थे। फिर भी जब उन्होंने लड़कियों के आने की खबर सुनी तो वे भी उन लड़कियों को देखने गये।

राजकुमार ने जब अपने माता पिता को वहॉ आते देखा तो वह बहुत आश्चर्य में पड़ गया उसने उनसे पूछा कि वे इतने दुखी क्यों

थे। उन्होंने कहा कि उनका एक बेटा खो गया है इसलिये वे इतने दुखी थे।

राजकुमार बोला — "मैं ही तो आपका वह बहुत दिनों से खोया हुआ बेटा हूँ।"

अपने बेटे को ज़िन्दा देख कर राजा और रानी बहुत खुश हुए और उसको अपने घर ले गये। घर जा कर उन्होंने अपने तीनों बेटों की शादियाँ इतनी धूमधाम से कीं कि सारा महल गूँज उठा।

4 सोने के अंडे वाला केंकड़ा[15]

केंकड़े की इस लोक कथा का यह केंकड़ा सोने के अंडे देता है। और केवल सोने अंडे ही नहीं बल्कि और बहुत कुछ भी देता है। इसको पढ़ कर तो तुमको लगेगा कि "काश एक ऐसा केंकड़ा हमें भी मिल जाये।"

एक बार एक राजा[16] था जिसके दो बेटे थे। एक बार वह इतना बीमार पड़ा कि काम करने के लायक ही नहीं रहा। उसके इलाज में उसकी सारी बचत खत्म हो गयी पर फिर भी वह ठीक नहीं हुआ।

बचत खत्म होने के बाद उसने अपने घर की चीज़ें बेचनी शुरू कर दीं। यहाँ तक कि उसकी छत में लगे टाइल्स भी बिक गये।

एक दिन जब उसकी आलमारी बिल्कुल खाली पड़ी थी तो वह बोला — "अब मैं शिकार के लिये जाता हूँ देखता हूँ कि शायद मुझे कुछ चिड़ियें ही मिल जायें।"

किस्मत की बात उस दिन उसको एक चिड़िया भी दिखायी नहीं दी।

---

[15] The Crab With the Golden Eggs (Story No 146) – a folktale from Italy from its Calabria area. Adapted from the book : "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.
[16] Translated for the word "Mason" who builds buildings.

पर जब वह घर वापस आ रहा था तो उसको एक केंकड़ा दिखायी दे गया जो एक बड़े से पत्थर पर चिपका हुआ था।

उसने उसको ज़िन्दा ही पकड़ लिया और उसको अपने थैले में रख लिया। वह सोचता जा रहा था कि वह इस केंकड़े को अपने बच्चों को खेलने के लिये दे देगा। सो घर जा कर उसने उस केंकड़े को अपने बच्चों को खेलने के लिये दे दिया। वह एक मादा केंकड़ा थी।

बच्चों ने उस मादा केंकड़े को एक छोटे से पिंजरे में बन्द कर दिया। अगली सुबह उन्होंने देखा कि उस मादा केंकड़े ने तो एक अंडा दिया है। वे उस अंडे को उठा कर अपने पिता के पास ले गये।

उस अंडे को देखते ही वह राज बोला कि "अरे यह तो सोने का अंडा है।" वह तुरन्त ही बाजार गया और उस सोने के अंडे को बेच आया। वह अंडा 6 डकैट[17] का बिका।

वह मादा केंकड़ा हर रात एक सोने का अंडा देती थी और हर सुबह वह राज उस अंडे को बाजार में बेच आता। कुछ दिनों में ही वह राज बहुत

[17] Ducat – a currency used in those days in Italy. Shakespeare's "The Merchant of Venice" also mentions this currency. That drama is set in Italy of 1595.

अमीर हो गया क्योंकि अब तो उसकी 6 डकैट रोज की आमदनी थी।

इस राज के बराबर में एक दरजी रहता था। राज की अमीरी देख कर उसने सोचा कि “मेरी समझ में यह नहीं आता कि यह इतना गरीब राज कुछ दिनों में ही इतना अमीर कैसे बन गया।”

कुछ दिनों तक उसके ऊपर नजर रखने के बाद उसने राज के अमीर बनने का राज़ जान ही लिया। उसकी अमीरी का राज़ था एक मादा केंकड़ा।

इस दरजी के तीन बच्चे थे – दो लड़के और एक लड़की। उसने सोचा कि मैं अपनी बेटी की शादी इस राज के लड़के से कर देता हूँ। सो दोनों की सगाई कर दी गयी।

दरजी उस राज से बोला — “मैं अपनी बेटी का दहेज तैयार कर रहा हूँ पर तुम भी अपने केंकड़े को अपने बेटे के दहेज में देने के लिये तैयार रखना।”

राज ने जवाब दिया — “जब तक वह मेरे बेटे का दहेज है वह तैयार है।”

जब दरजी को केंकड़ा मिल गया तो उसने केंकड़े को ध्यान से देखा तो उसने देखा कि उसके पेट पर तो कुछ लिखा था।

अब वह तो दरजी था सो वह तो लिखना पढ़ना जानता था सो उसने पढ़ा – “जो कोई भी केंकड़ा और उसका खोल खायेगा वह एक दिन राजा बन जायेगा। जो कोई केंकड़ा और उसके पैर

खायेगा उसको हर सुबह अपने तकिये के नीचे पैसों का एक थैला मिलेगा।”

इसको पढ़ कर दरजी ने सोचा मैं इस केंकड़े को अपने दोनों बेटों को खिला देता हूँ। एक को केंकड़ा और उसका खोल और दूसरे को केंकड़ा और उसके पैर। बस फिर दोनों ही अपने अपने तरीके से अमीर हो जायेंगे।

उसने उस केंकड़े को मार कर आग पर भूनने के लिये रख दिया और अपने बेटों को बुलाने चला गया।

जैसे ही वह अपने बेटों को बुलाने के लिये वहाँ से गया तो उस राज के दोनों बेटे वहाँ आ गये जिसकी वह मादा केंकड़ा थी। केंकड़े को आग पर भुनते देख कर उनके मुँह में पानी आ गया।

उन्होंने आपस में कहा कि “चलो हम लोग इसे खा लेते हैं। तुम इसका खोल खा लो और मैं इसके पैर खा लेता हूँ।” और दोनों ने उसके खोल और पैर खा लिये।

जब दरजी वापस आया तो उसने देखा कि उसकी वह मादा केंकड़ा तो जा चुकी है। यह देख कर दरजी बहुत दुखी हुआ और उसने अपनी बेटी की शादी तोड़ दी।

यह देख कर राज के बेटों को लगा कि उन्होंने यह सब क्या कर दिया। इससे दुखी हो कर उन्होंने सोचा कि उनको घर छोड़ कर चले जाना चाहिये और दुनियाँ में जा कर अपनी किस्मत आजमानी चाहिये। ऐसा सोच कर वे दोनों घर छोड़ कर चले गये।

वे जब पहले शहर में आये तो वहाँ रात को एक सराय में रुके। सुबह को जब वे उठे तो छोटे भाई ने अपने तकिये के नीचे पैसों से भरा एक थैला पाया।

वह अपने बड़े भाई से बोला — "भैया, यहाँ तो इन लोगों ने हमको चोर ही समझ लिया है। लगता है हमको ललचाने के लिये इस सराय की मालकिन ने हमारे तकिये के नीचे यह पैसों का थैला रख दिया है। और अब वह हमारा चोरी का नाम लगा देगी।"

इतना कह कर वह उस पैसों के थैले को ले कर उस सराय की मालकिन के पास गया और बोला — "मैम हम चोर नहीं हैं। हम आपके इस थैले को वापस करने आये हैं और हमारा इस थैले को तुमको वापस करना ही इस बात को साबित करता है कि हमने इस पैसे को नहीं चुराया है।"

सराय की मालकिन को तो पैसों का थैला देख कर जैसे बिजली का सा झटका लगा।

उसने अपना आश्चर्य छिपा कर पैसों का वह थैला उस लड़के से ले लिया और बोली — "हाँ यह थैला तो मेरा ही है। मेरी यह बहुत बुरी आदत है कि मैं पैसा कहीं भी रखा छोड़ देती हूँ और फिर भूल जाती हूँ। तुमने अच्छा किया कि इसे मुझे वापस कर दिया।"

अगले दिन उस छोटे भाई के तकिये के नीचे से फिर एक पैसों का थैला निकला तो वह बोला — "लगता है कि वे हमारे ऊपर

अभी भी शक कर रहे हैं इसलिये अच्छा हो अगर हम यहाँ से कहीं और चले जायें।"

सो उसने वह थैला भी उस सराय की मालकिन को दे दिया। मालकिन बोली — "मै तुमको विश्वास दिलाती हूँ कि मैंने इसको वहाँ किसी मतलब से नहीं छोड़ा। बस मैं ज़रा भूल ही जाती हूँ। थैला वापस करने के लिये तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद।"

उन भाइयों ने उससे अपना बिल पूछा, उसको पैसे दिये और वहाँ से चल दिये। अगली रात उन्होंने एक जंगल में गुजारी जहाँ वे जमीन पर सोये। वहाँ उनको एक पत्थर का तकिया इस्तेमाल करना पड़ा।

पर अगले दिन फिर उस पत्थर के पास एक पैसों का थैला पड़ा था। उसको देख कर छोटा भाई बोला — "इससे तो यह पता चलता है कि वह सराय की मालकिन हमें अभी भी नहीं छोड़ रही। वह हमारे पीछे यहाँ तक आ पहुँची। इस बार हम उसको यह पैसे वापस नहीं देंगे। तभी वह सीखेगी।"

पर जब उसने देखा कि वह कहीं भी सोये उसको हर दिन सुबह को यह थैला मिल रहा था तब उसकी यह समझ में आया कि वह उसकी अच्छी किस्मत से मिल रहा था न कि सराय की मालकिन से।

चलते चलते वे दोनों भाई एक चौराहे पर आये तो दोनों ने वहाँ से अपने अपने रास्ते अलग अलग कर लिये।

बड़े भाई ने छोटे भाई को एक बोतल दी और छोटे भाई ने बड़े भाई को एक चाकू देते हुए कहा — "यह चाकू लो भैया और जब तक यह चमकता रहेगा तब तक मेरी ज़िन्दगी को कोई खतरा नहीं है। पर जब इसमें जंग लगने लगे तो समझो कि मैं मर गया।"

उन्होंने पैसे आपस में बॉटे, एक दूसरे को विदा कहा और अपने अपने रास्ते चल दिये।

चलते चलते बड़ा भाई एक शहर में आ गया। वहॉ का राजा मर गया था सो मन्त्रियों ने एक घोषणा की कि "हमको अब ऐसा करना चाहिये कि हमको एक कबूतर छोड़ना चाहिये और जिसके सिर पर भी वह बैठेगा हम उसको ही अपना राजा बनायेंगे।"

अब हुआ क्या कि जब उन लोगों ने वह कबूतर छोड़ा तो वह उस बड़े भाई के सिर पर जा कर बैठ गया। तुरन्त ही उसने अपने आपको बहुत सारी गाड़ियों, सेना और बाजे से घिरा हुआ पाया।

पहले तो उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि ऐसा क्यों हो रहा था। पर जब बाद में उसको पता चला कि वह तो अब उस शहर का राजा बन गया है तो वह बहुत खुश हुआ।

वे सब मिल कर उसको महल ले गये। उसको राजा के कपड़े पहनाये, ताज पहनाया और उसको वहॉ का राजा बना दिया। अब वह वहॉ का राजा बन कर राज करने लगा।

इधर छोटा भाई एक और शहर में आ पहॅुचा। वहॉ उसने एक सराय में कमरा लिया। यह सराय एक राजकुमारी के महल के सामने

थी। यह राजकुमारी अभी कुँआरी थी और अपना सारा दिन अपने महल के छज्जे पर बैठ कर गुजारती थी।

एक दिन उसने इस छोटे भाई को सराय के छज्जे पर देख लिया तो वह उससे बात करने लगी। एक में से एक बात निकलती

ही जाती थी और उनकी बातें खत्म होने पर ही नहीं आती थीं।

आखिर राजकुमारी बोली — "अगर तुम मेरे घर आना पसन्द करो तो हम लोग यहाँ कुछ आनन्द करें?"

"ओह यह तो मेरे लिये बड़ी खुशी की बात होगी।" कह कर वह राजकुमारी के पास चला गया।

जब वह राजकुमारी के पास पहुँच गया तो राजकुमारी बोली — "आओ ताश खेलें?" सो उन लोगों ने ताश खेलना शुरू कर दिया।

पर राजकुमारी हर बार जीत जाती थी और इस तरह वह लड़का हजारों डकैट हार गया।

पर इससे ज़्यादा आश्चर्य की बात तो यह थी कि उसको पैसे की कमी नहीं पड़ रही थी। यह उसके उस पैसों के थैले का कमाल था जो उसको हर सुबह अपने तकिये के नीचे मिलता था।

यह सब देख कर वह राजकुमारी बड़े आश्चर्य में थी कि वह इतना अमीर कैसे हो सकता था।

उसने एक टोना टोटका करने वाले से पूछा तो उसने राजकुमारी को बताया कि उस अजनबी के शरीर के अन्दर एक जादू है जिसकी वजह से उसका पैसा कभी ख़त्म नहीं होता।

उसने राजकुमारी से यह भी कहा कि उसके अन्दर एक आधा केंकड़ा है जिसकी वजह से हर सुबह उसको पैसों का एक थैला अपने तकिये के नीचे रखा मिल जाता है।

राजकुमारी ने पूछा — "उस जादू को मैं अपने लिये कैसे ले सकती हूँ?"

वह टोने टोटके वाला बोला — "जैसा मैं कहता हूँ वैसा ही करना। यह एक दवा लो और इस दवा को उसकी शराब के गिलास में डाल देना और वह शराब उसको पिला देना।

यह दवा उसके पेट में जा कर जो कुछ भी उसके पेट में होगा वह सब बाहर निकाल कर ले आयेगी – वह आधा केंकड़ा भी। उसको तुम बहुत सँभाल कर साफ कर लेना और निगल जाना।

फिर वह पैसों का थैला बजाय उसके तकिये के नीचे से तुम्हारे तकिये के नीचे से निकलना शुरू हो जायेगा।"

राजकुमारी ने वैसा ही किया और अब वह पैसों का थैला बजाय लड़के के तकिये के नीचे से उसके तकिये के नीचे से निकलना शुरू हो गया।

वह लड़का बेचारा फिर से गरीब हो गया। अब उसके पास और कोई चारा नहीं था कि वह अपनी सब चीज़ें बेच दे और फिर से दुनियाँ में अपनी किस्मत आजमाने निकल पड़े।

वह चलता रहा चलता रहा और चलते चलते भूख से इतना कमजोर हो गया कि वह आगे नहीं जा सका और एक घास के मैदान में आ कर गिर गया।

वहाँ कम से कम उसके पास कुछ तो था खाने के लिये। उसने हाथ बढ़ा कर थोड़ी सी घास तोड़ी और खा ली।

इत्तफाक से वह घास चिकोरी[18] की एक जाति थी और जैसे ही उसने वह घास खायी वह गधा बन गया। उसने सोचा कम से कम अब मैं भूखा नहीं रहूँगा क्योंकि अब मैं घास खा सकता हूँ।

उसके बाद उसने एक पौधा और खाया जो देखने में बन्द गोभी जैसा लगता था। जैसे ही उसने उस पौधे को खाया तो लो, वह तो फिर से आदमी बन गया। उसने सोचा कि ये पौधे तो मेरा काम बना देंगे।

[18] Chicory – is a cultivated salad plant with blue flowers and with a good size root which is roasted and powdered for a substitute or additive to coffee – see the picture of its leaves above.

उसने उन दोनों घासों में से थोड़ी थोड़ी घास ले ली जिन्होंने उसको पहले गधे में बदल दिया था और फिर गधे से आदमी में बदल दिया था।

फिर उसने एक माली का रूप रखा और उसी राजकुमारी की खिड़की के नीचे इन घासों को बेचने चल दिया। उसने आवाज लगायी — "बढ़िया वाली चिकोरी ले लो बढ़िया वाली चिकोरी।"

राजकुमारी ने उसको सुना और उसके हाथ में मुलायम चिकोरी देखी तो उसको बुलाया और उस चिकोरी को तुरन्त ही चखा। उस को खाते ही वह एक गधा बन गयी।

उस लड़के ने उसके ऊपर तुरन्त ही एक गद्दी रखी और उसको महल की सीढ़ियों से नीचे की तरफ ले चला। कोई यह शक भी नहीं कर सका कि वह राजकुमारी थी।

वह उस गधे पर सवार हो कर एक ऐसी जगह ले गया जहाँ बहुत सारे आदमी काम कर रहे थे। उसने उन लोगों से कहा कि वह काम की तलाश में घूम रहा था सो अगर वे दे सकते हैं तो वे उसको कुछ काम दे दें।

उन्होंने उसको अपने यहाँ काम पर रख लिया और वह उस गधे पर दुगुने बोझ के पत्थर लाद कर लाने लगा। बोझ की वजह से वह गधा लड़खड़ा जाता था और उसके लड़खड़ाने पर वह उसको खूब मारता था।

लोग उससे पूछते कि वह उस गधे के साथ इतनी सख्ती का बरताव क्यों करता था तो वह उनको जवाब देता "यह मेरा अपना मामला है। तुमको इसमें बीच में बोलने की जरूरत नहीं है।"

यह देख कर उन्होंने राजा से शिकायत की तो राजा ने उसको अपने दरबार में बुला भेजा। उसने भी उससे पूछा कि वह उस गधे के साथ इतना बुरा बरताव क्यों कर रहा था।

लड़के ने जवाब दिया "क्यों कि इसके साथ ऐसा ही बरताव करना चाहिये।"

तभी उसने देखा कि उस राजा की कमर से एक चाकू लटका हुआ है। लो और यह चाकू तो वही चाकू था जो उसने अपने बड़े भाई को दिया था।

छोटा भाई बोला — "पहले मेरा वह पैसा वापस करो जो मैंने तुमको चौराहे पर दिया था।"

राजा बोला — "एक राजा से इस तरह से तुम्हारी बात करने की हिम्मत कैसे हुई?"

"तो फिर मुझे तुमसे कैसे बात करनी चाहिये? मैं तुमको पहचान गया हूँ। तुम मेरे भाई हो। यह देखो यह बोतल जो तुमने मुझे दी थी। और वह देखो मेरा दिया हुआ चाकू तुम्हारी कमर में।"

इस तरह दोनों भाइयों ने आपस में एक दूसरे को पहचान लिया। दोनों एक दूसरे से लिपट गये। फिर छोटे भाई ने अपने बड़े

भाई को उस गधे के बारे में बताया जो कि सचमुच में एक राजकुमारी थी।

राजा ने पूछा — "अगर यह तुम्हारा आधा केंकड़ा वापस कर दे तो क्या तुम इसको राजकुमारी में बदल दोगे?"

"हाँ।"

"तो तुम उसको राजकुमारी में बदल दो।"

सो उस छोटे भाई ने उस गधे को वही दवा दी जो पहले राजकुमारी ने उसको दी थी। उस गधे ने सब कुछ उगल दिया – आधा केंकड़ा भी।

उसके बाद उस छोटे भाई ने उसको वह घास खिलायी जो देखने में बन्द गोभी जैसी लगती थी और जिसको खा कर वह फिर से राजकुमारी बन गयी। उस राजकुमारी से उसने फिर शादी कर ली। राजा ने अपने छोटे भाई को अपना जनरल बना लिया और फिर सब सुख से रहने लगे।

5 सात सिर वाला राक्षस[19]

पेड़ लगाने की इन लोक कथाओं में यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये इटली देश की लोक कथाओं से ली है। इसमें कोई अपनी ज़िन्दगी के लिये पेड़ तो लगा कर नहीं जाता हॉ घर में मछली का गौल ब्लैडर है जिससे अगर खून टपके तो पता चलता है कि गया हुआ आदमी खतरे में है और किसी दूसरे को उसकी सहायता करने जाना चाहिये।

एक बार एक मछियारा था जिसके कोई बच्चा नहीं था हालॉकि उसकी शादी को कई साल हो गये थे।

एक दिन उस मछियारे ने अपना जाल उठाया और मछली पकड़ने के लिये पास वाली एक झील पर गया। वहॉ उस दिन उसने एक बहुत बड़ी और सुन्दर मछली पकड़ी।

जैसे ही उसने वह मछली पानी से बाहर निकाली उस मछली ने मछियारे से प्रार्थना की वह उसको छोड़ दे। उसने कहा कि अगर वह उसको छोड़ देगा तो वह उसको एक ऐसे तालाब का पता

[19] The Dragon With Seven Heads (Story No 58) – a folktale from Italy from its Bologna area. Adapted from the book: "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated ny George Martin in 1980.

बतायेगी जहाँ वह बहुत जल्दी से और बहुत सारी मछली पकड़ पायेगा।

मछली को बोलते हुए सुन कर मछियारा डर गया और तुरन्त ही उसने उसको वहीं पानी में छोड़ दिया। मछली ने फिर उसको उस तालाब का पता बताया जहाँ वह बहुत जल्दी से और बहुत सारी मछली पकड़ सकता था और वह खुद तुरन्त ही पानी में गायब हो गयी।

मछियारा मछली के बताये गये तालाब पर गया और दो तीन बार में ही उसने इतनी सारी मछलियाँ पकड़ लीं कि वह एक गधे के बोझ के बराबर हो गयीं।

जब वह घर लौटा तो उसकी पत्नी ने पूछा कि उसने इतनी सारी मछली इतनी जल्दी से कैसे पकड़ लीं। मछियारे ने जो कुछ झील भी पर हुआ था सब कुछ उसको विस्तार में बता दिया।

इस पर उसकी पत्नी बहुत नाराज हो कर बोली — "तुम तो बहुत ही सीधे हो। तुमने इतनी सुन्दर मछली को कैसे जाने दिया? कल याद करके उस मछली को पकड़ लेना और घर ले आना। कल मैं उसका सूप बनाऊँगी। उसका सूप तो बड़ा मजेदार बनना चाहिये।"

अपनी पत्नी को खुश करने के लिये अगले दिन वह उसी झील पर फिर वापस गया और मछली पकड़ने के लिये अपना जाल

फेंका। उस दिन भी वह बोलती मछली उसके जाल में आ गयी और उस दिन भी उसने उसकी प्रार्थना पर उसको छोड़ दिया।

पिछले दिन की तरह से उस मछियारे ने उस दिन भी उसी तालाब में से फिर से बहुत सारी मछलियाँ पकड़ीं और फिर जब वह घर लौट कर आया तो उसने अपनी पत्नी को बताया कि उस दिन क्या हुआ था तो वह फिर से बहुत बहुत नाराज हुई।

उसने अपनी कमर पर हाथ रखे और अपने पति को घर से बाहर निकाल कर कहा – "ओ बेवकूफ बैल, खरदिमाग[20], क्या तुमको पता नहीं चल रहा कि खुशकिस्मती तुमसे दूर भाग रही है?

तुम ऐसी मछली को छोड़ कैसे सकते हो? या तो तुम मुझे वह बड़ी मछली कल ला कर दे दो वरना पछताओगे कि तुम उसको ले कर क्यों नहीं आये। आया समझ में?"

सुबह को वह मछियारा फिर उसी झील पर गया। उसने फिर अपना जाल फेंका और उस बड़ी मछली को फिर से पकड़ लिया। आज उसने उस मछली की प्रार्थना पर बिल्कुल भी ध्यान नहीं दिया।

बस वह उसको ले कर सीधा घर गया। उसकी पत्नी ने उससे वह मछली ले ली। वह मछली अभी भी ज़िन्दा थी सो उसने उसको ताजा पानी से भरे एक टब में डाल दिया।

[20] Translated for the word "Blockheaded"

दोनों पति पत्नी उसके पास खड़े खड़े उसको देखते रहे और बात करते रहे कि उसको किस तरह से बनाया जाये ताकि वह सब से ज़्यादा स्वादिष्ट बने।

इसी समय उस मछली ने अपना सिर पानी में से बाहर निकाला और बोली — "क्योंकि मैं अब मरने से नहीं बच सकती इसलिये मैं तुम लोगों से कुछ कहना चाहती हूँ।"

मछियारे और उसकी पत्नी ने कहा कि "बोलो" तो मछली बोली — "जब मैं मर जाऊँ, पक जाऊँ और काट दी जाऊँ तो मेरा माँस इस औरत को खाने के लिये दे देना।

मेरा रस घोड़ी को पिला देना। मेरा सिर कुत्ते को खिला देना। मेरी तीन सबसे बड़ी हड्डियाँ बागीचे में गाड़ देना और मेरा गौल ब्लैडर[21] रसोई में एक लट्ठे से टाँग देना। तुम्हारे बच्चे हो जायेंगे। अगर तुम्हारे बच्चों में से किसी भी बच्चे को कोई भी दुख होगा तो मेरे गौल ब्लैडर से खून टपकने लगेगा।"

इसके बाद मछियारे की पत्नी ने उसे काट कर पका लिया। दोनों ने जैसा कि मछली ने उनसे कहा था वैसा ही किया। उसका माँस उस औरत ने खा लिया। उसका रस घोड़ी को पिला दिया। उसका सिर कुतिया को खिला दिया। उसकी तीन सबसे बड़ी हड्डियाँ बागीचे में गाड़ दीं और उसका गौल ब्लैडर रसोई में एक लट्ठे से टाँग दिया।

[21] Gall Bladder – a part of the body

कुछ समय बीत गया तो एक ही रात में उस औरत को, उस घोड़ी को और उस कुतिया को सबको तीन तीन नर बच्चे हुए। मछियारा बोला — "ओह, नौ बच्चे एक ही रात में।"

वे तीनों बच्चे आपस में इतने एक से लगते थे कि अगर उनके गले में कोई पट्टा न बॉधा जाये तो उनको अलग अलग करना मुमकिन नहीं था।

मछली की जो तीन हड्डियॉ बागीचे में बोयी गयीं थीं उनसे तीन सुन्दर तलवारें पैदा हुईं। मछियारे के तीनों लड़के जब बड़े हो गये तो उसने उनको हर एक को एक एक घोड़ा, एक एक कुत्ता और एक एक तलवार और अपनी तरफ से एक एक बन्दूक भेंट में दे दी।

कुछ दिनों बाद उसका सबसे बड़ा बेटा गरीबी में रहता रहता थक गया तो उसने बाहर जा कर अपनी किस्मत आजमाने का विचार किया। वह अपने घोड़े पर चढ़ा, अपना कुत्ता, तलवार और बन्दूक उठायी और सबको विदा कहा।

अपने भाइयों से उसने कहा — "अगर उस लट्ठे से लटके गौल ब्लैडर से खून टपके तो तुम लोग मुझे ढूँढने निकल पड़ना। क्योंकि उस समय मैं या तो मर गया होऊँगा या फिर किसी भारी मुसीबत में फॅस गया होऊॅगा।" और वह वहॉ से चला गया।

बहुत दिनों तक वह अनजानी जगहों से गुजरता रहा। आखिर में वह एक बड़े शहर के दरवाजे पर आया। उसने देखा कि सारा शहर दुख में डूबा हुआ है।

वह उस शहर में घुसा तो उसने देखा कि उस शहर के सब रहने वाले शोक मना रहे हैं और काले कपड़े पहने घूम रहे हैं। उसने खाना खाने के लिये उस शहर में एक सराय ढूँढी और उस सराय के मालिक से इस दुख और शोक की वजह पूछी।

सराय के मालिक ने उसको बताया कि एक सात सिर वाला राक्षस है जो यहाँ रोज पुल पर तीसरे पहर में आता है। उस समय अगर उसको कोई कुँआरी लड़की खाने के लिये न दी जाये तो वह शहर के अन्दर घुस आता है और जो कोई भी उसके रास्ते में आता है उसको मार डालता है।

रोज ही बहुत सारे लोग मारे जाते हैं। आज राजा की बेटी का बारी है। आज उस राक्षस के खाने के लिये उसको उस पुल पर दोपहर को होना चाहिये।

राजा ने मुनादी भी पिटवा रखी है कि जो कोई राजा की बेटी को इस सात सिर वाले राक्षस से बचायेगा वह उसी से अपनी बेटी की शादी कर देगा।

वह लड़का बोला — "राजा की बेटी को और सारे शहर को बचाने का कोई न कोई रास्ता तो होना ही चाहिये। मेरे पास एक

मजबूत तलवार है, एक कुत्ता है, एक घोड़ा है, और एक बन्दूक है। मैं राजा से मिलना चाहूँगा।"

शहर वाले उसको तुरन्त ही राजा के पास ले गये। उसने राजा से उस राक्षस को मारने की इजाज़त माँगी।

राजा बोला — "ओ साहसी लड़के, ध्यान रखो कि तुमसे पहले और भी कई लोग उस राक्षस को मारने की कोशिश कर चुके हैं और इस कोशिश में मारे जा चुके हैं। बेचारे लोग। मुझे उन पर तरस आता है।

पर अगर तुम अपनी ज़िन्दगी को खतरे में डाल कर उस राक्षस को मारना चाहते हो तो तुम ऐसा कर सकते हो। और अगर तुमने उस राक्षस को मार दिया तो मैं अपनी बेटी की शादी तुमसे कर दूँगा और मरने के बाद अपना राज्य भी तुमको दे जाऊँगा।"

वह लड़का बोला — "राजा साहब, मैं उस राक्षस को मारना चाहता हूँ आप अपनी बेटी को निडर हो कर पुल पर भेजिये।"

यह कह कर उस निडर नौजवान ने अपना कुत्ता लिया और घोड़ा लिया और उस पुल पर जा कर बैठ गया जहाँ वह राक्षस आने वाला था। ठीक 12 बजे राजा की बेटी सिर से पाँव तक काली सिल्क की पोशाक पहने अपनी दासियों के साथ वहाँ आ गयी।

जब वे सब पुल पर आधी दूर चल कर आ गयीं तो उसकी दासियाँ उसको वहाँ उसी के भरोसे छोड़ कर आँखों में आँसू लिये

वहाँ से लौट गयीं। उसने इधर उधर देखा तो पुल पर एक आदमी को एक कुत्ते के साथ बैठा पाया।

वह बोली — "ओ कुलीन नौजवान, तुम यहाँ क्या कर रहे हो? क्या तुमको मालूम नहीं कि एक राक्षस यहाँ बस किसी भी समय मुझे खाने के लिये आने वाला है। और अगर उसने तुमको यहाँ देख लिया तो वह तुमको भी खा जायेगा।"

उस लड़के ने जवाब दिया — "मुझे उसके बारे में अच्छी तरह मालूम है राजकुमारी जी और मैं यहाँ तुमको उसी से बचाने और फिर तुमसे शादी करने के लिये ही आया हूँ।"

राजकुमारी बोली — "ओ गरीब नौजवान, तुम भाग जाओ यहाँ से, नहीं तो उस राक्षस को आज मेरी बजाय दो दो लोग खाने को मिल जायेंगे। वह राक्षस बहुत ताकतवर है। तुम उसको मारने की सोच भी कैसे सकते हो।"

उधर वह नौजवान राजकुमारी को देखते ही उससे प्यार करने लगा था। वह बोला — "तुम्हारे प्यार के लिये तो मैं अपनी ज़िन्दगी को भी खतरे में डाल सकता हूँ। और नहीं तो क्या होगा मेरा?"

अभी वह यह सब कह कर ही चुका था कि महल की घड़ी ने **12** बजाये। जमीन काँपने लगी और एक सात सिर वाला राक्षस धुँए और आग की लपटों में से निकल कर आता दिखायी दिया।

वहाँ से निकल कर वह सीधा राजकुमारी की तरफ बढ़ा। उसके सातों मुँह खुले हुए थे और वह खुशी से सीटी बजा रहा था क्योंकि उसने देख लिया था कि आज उसको एक की बजाय दो आदमी खाने को मिल रहे थे।

वह नौजवान बिजली की सी तेज़ी से अपने घोड़े पर चढ़ गया और उस राक्षस की तरफ बढ़ा। उसने अपने कुत्ते को भी राक्षस के ऊपर हमला करने को कहा।

अपनी तलवार लहराते हुए उसने उस राक्षस के एक के बाद एक सात में से छह सिर काट डाले। इसके बाद राक्षस ने सुस्ताने के लिये कुछ समय माँगा। वह लड़का भी बहुत हाँफ रहा था सो बोला — "ठीक है हम कुछ देर के लिये सुस्ता लेते हैं।"

पर राक्षस ने क्या किया कि उसने अपना सातवाँ सिर जमीन पर रगड़ा और वह फिर से अपने सातों सिरों के साथ उठ कर खड़ा हो गया।

यह देख कर उस नौजवान ने सोच लिया कि उसको उसके सातों सिर एक साथ ही काटने होंगे तभी वह मरेगा। सो वह राक्षस की तरफ दौड़ा और अपनी तलवार तब तक चलाता रहा जब तक कि उसके सातों सिर कट कर जमीन पर नहीं गिर गये।

उसके बाद उसने अपनी तलवार से उसके सातों सिरों की सातों जीभें काट लीं। फिर उसने राजकुमारी से पूछा — "तुम्हारे पास कोई रूमाल है क्या?"

राजकुमारी ने उसको एक रूमाल दे दिया। उस रूमाल में उसने वे सातों जीभें रख लीं और अपने घोड़े पर चढ़ कर अपनी सराय आ गया जहाँ उसने खाना खाया था।

वहाँ आ कर वह नहाया धोया और अपने कपड़े बदल कर राजा के पास जाने के लिये तैयार हुआ।

जैसा कि उसकी किस्मत में लिखा था – उस पुल के पास एक बहुत ही चालाक और नीच कोयला बेचने वाला[22] रहता था। वह दूर से ही यह लड़ाई देख रहा था।

उसने सोचा आज मैं इस नौजवान को बेवकूफ बनाता हूँ। इसने जो ये कटे हुए सिर यहाँ नीचे छोड़ दिये हैं मैं इनका इस्तेमाल कर के राजकुमारी से शादी करता हूँ।

वह वहाँ गया, उसने सातों सिर उठाये, एक थैले में रखे और राजा के महल की तरफ चल दिया। साथ में उसने राक्षस के खून से सना हुआ बड़ा वाला चाकू भी अपने हाथ में ले लिया।

वहाँ जा कर वह बोला — "राजा साहब देखिये, आपके सामने यह राक्षस को मारने वाला खड़ा है। और ये हैं उसके सातों सिर जो मैंने इस चाकू से एक एक करके काटे हैं। अब आप अपना शाही वायदा निभायें और अपनी बेटी की शादी मुझ से कर दें।"

राजा तो उस बदसूरत आदमी को देख कर सन्न रह गया। उसको उस आदमी की कहानी की सचाई पर शक हो रहा था।

---

[22] Translated for the word "Coalman"

उसको पूरा विश्वास था कि वह साहसी नौजवान मारा गया और आखिरी पल में जब उसने राक्षस को मार दिया होगा तो यह कोयले वाला आदमी वहाँ पहुँच गया होगा और उसके सिर ले कर यहाँ चला आया है।

पर शाही वायदा तो टाला नहीं जा सकता था सो राजा बोला — "अगर ऐसे ही हुआ है जैसा कि तुम बता रहे हो तो मेरी बेटी तुम्हारी है तुम उसे ले जा सकते हो।"

इस समय राजकुमारी ने जो उस समय दरबार में ही थी और यह सब सुन रही थी चिल्लाना शुरू कर दिया — "यह झूठ बोल रहा है पिता जी। यह वह नहीं है जिसने उस राक्षस को मारा। वह तो अभी आने वाला होगा।"

इस बात पर कुछ गरमागरम बहस होने लगी पर वह कोयला बेचने वाला आदमी अपनी कहानी पर डटा रहा और उसे साबित करने के लिये उसने वे सातों सिर वहाँ रखे हुए थे।

राजा के पास उसकी बात न मानने की कोई वजह नहीं थी क्योंकि राक्षस के सातों सिर वहाँ मौजूद थे।

उसके पास और कोई चारा भी नहीं था सो उसने अपनी बेटी को शान्त रहने के लिये और जा कर शादी के लिये तैयार होने के लिये कहा। उसी समय राजा ने अपनी बेटी की शादी की घोषणा भी कर दी।

तीन दिन में शादी होने वाली थी और तीनों दिन एक शानदार दावत होने वाली थी। उन तीनों दिनों के आखीर में शादी हो जाने वाली थी।

इस बीच वह नौजवान जिसने सचमुच में राक्षस को मारा था राजा के महल में आया। पर राजा के चौकीदारों ने उसको किसी भी कीमत पर अन्दर नहीं जाने दिया।

उसी समय उसने एक शाही मुनादी पीटने वाले को सुना। वह कह रहा था कि राजकुमारी की शादी एक कोयले वाले आदमी के साथ होने वाली है।

उस नौजवान ने राजा के चौकीदारों से बहुत कहा कि वे उसको अन्दर जाने दें पर उन्होंने उसको अन्दर नहीं जाने दिया। कुछ ही देर में वह कोयला बेचने वाला आदमी बाहर आया। उसने उस नौजवान को वहाँ देखा तो उन चौकीदारों को उस नौजवान को बाहर निकालने का हुकुम दे दिया।

चौकीदारों ने उस नौजवान को महल से बाहर निकाल दिया। अब उस नौजवान के पास और कोई चारा नही था कि वह वहाँ से वापस सराय चला जाये।

गुस्से में उसने उस शादी को रोकने का, उस कोयला बेचने वाले की पोल खोलने का और अपने को उस राक्षस को मारने वाला साबित करने का कोई तरीका ढूँढने का निश्चय किया।

दरबार में मेज सजी हुई थी और सारे कुलीन लोग वहाँ मौजूद थे। राजकुमारी के पास वह कोयला बेचने वाला मखमल की पोशाक पहने बैठा हुआ था।

क्योंकि वह कोयला बेचने वाला आदमी बहुत ही ठिगना था इसलिये उसको दूसरे लोगों के बराबर में लाने के लिये उसके नीचे सात गद्दियाँ रखी हुई थीं।

सराय में बैठ कर काफी दिमाग लड़ाने के बाद उस नौजवान ने अपने कुत्ते को उठाया जो उसके पैरों के पास सो रहा था।

वह उससे बोला — "सुन ओ मेरे वफादार कुत्ते, दौड़ कर राजकुमारी के पास महल में जा और जा कर उस अकेली को ही प्यार करना, और किसी को नहीं।

और जब वे सब खाना खाने बैठें तो मेज पर रखा सारा खाना बिगाड़ देना और भाग आना। और हाँ ध्यान रखना पकड़े नहीं जाना।"

जो उस कुत्ते को मालिक ने उससे कहा वह उसने सब समझ लिया और वहाँ से दौड़ लिया। महल में आ कर उसने राजकुमारी को ढूँढा और उसकी गोद में अपने पंजे रख दिये। उसने उँह उँह की और उसके हाथों और चेहरे को चाटा।

राजकुमारी ने उस कुत्ते को पहचान लिया और वह उसको देख कर बहुत खुश हुई। उसको सहलाते हुए उसने उसके कान में फुसफुसा कर उससे पूछा कि उसको बचाने वाला कहाँ है।

वह कोयला बेचने वाला आदमी राजकुमारी के कुत्ते को सहलाने पर शक कर रहा था कि वह उसको क्यों सहला रही थी सो उसने दावत वाले कमरे से उस कुत्ते को बाहर निकालने का हुकुम दे दिया।

उस समय वहाँ पर सूप परसा जा रहा था। कुत्ते ने मेज के मेजपोश का एक कोना पकड़ा और खींच दिया। इससे मेज पर रखी सारी चीज़ें नीचे आ गिरीं। सारा सूप बिखर गया। सारा फर्श खराब हो गया और प्लेटें और गिलास आदि सब टूट गये।

यह सब करके वह सीढ़ियों से इतनी तेज़ी से नीचे भाग गया कि कोई उसको देख भी नहीं सका कि वह गया किधर, पकड़ना तो दूर की बात थी। सारे मेहमान भौचक्के से देखते रह गये। दावत रुक गयी जिससे सब लोगों में एक खलबली मच गयी।

जब दूसरे दिन दावत का इन्तजाम हुआ तो नौजवान ने अपने कुत्ते से कहा — "जाओ और फिर से वही सब करके आओ।"

राजकुमारी ने जब कुत्ते को वापस आया देखा तो वह बहुत खुश हुई पर वह कोयले वाला फिर से शक करने लगा और डर गया। उसने फिर ज़ोर दिया कि उस कुत्ते को कोड़े मार कर कमरे से बाहर निकाल दिया जाये।

इस बार राजकुमारी कुत्ते को लिये हुए उठ खड़ी हुई और कोयला बेचने वाला आदमी अपने नीचपने के बावजूद उससे कुछ नहीं कह सका।

इस बार भी जब सूप परसा जा रहा था कुत्ते ने उस मेज का मेजपोश पकड़ कर खींच दिया और सब कुछ नीचे गिरा दिया। चौकीदार और नौकर उसके पीछे पीछे भागे भी पर इससे पहले कि वे उसके पास भी आते वह वहॉ से गायब हो गया।

तीसरी दावत के ठीक पहले नौजवान ने कहा — "फिर जाओ और वही सब एक बार फिर करके आओ पर इस बार राजा के चौकीदारों को यहॉ तक अपने पीछे पीछे आने देना।"

कुत्ते ने फिर वही किया और इस बार राजा के चौकीदारों को अपना पीछा कराते हुए मालिक के कमरे तक ले आया। वहॉ आ कर चौकीदारों ने उस नौजवान को पकड़ लिया और उसको राजा के पास ले गये।

राजा ने तुरन्त ही उस नौजवान को पहचान लिया और उससे पूछा — "क्या तुम वही आदमी नहीं हो जो उस दिन मेरी बेटी को उस राक्षस से बचाना चाहते थे?"

नौजवान बोला — "जी सरकार। निश्चित रूप से मैं वही आदमी हॅू। और मैंने राजकुमारी जी को बचाया भी है तभी तो वह आपके सामने हैं।"

यह सुन कर कोयला बेचने वाला आदमी चिल्लाया — "ऐसा नहीं है। उस राक्षस को मैंने खुद ने अपने दोनों हाथों से मारा है और इसको साबित करने के लिये मैं उसके सात सिर भी ले कर आया हॅू।"

कह कर उसने वे सातों सिर मँगवाये और मँगवा कर राजा के पैरों पर रख दिये।

तुरन्त ही नौजवान राजा से बोला — "हो सकता है कि यह आदमी उस राक्षस के सात सिर ले कर आया हो पर क्योंकि वे बहुत भारी थे इसलिये मैं तो उन सिरों को वहीं छोड़ आया था।

हाँ मैं उन सात सिरों की सात जीभ काट कर ले आया हूँ। यह देखने के लिये कि ये जीभें उन्हीं सिरों की हैं या नहीं, आप देखें कि इस आदमी के लाये सातों सिरों में उनकी जीभें हैं या नहीं।"

राजा ने उस कोयला बेचने वाले के लाये सातों सिर देखे तो उनमें से तो किसी भी सिर में एक भी जीभ नहीं थी। यह देख कर कोयला बेचने वाला तो सकते में आ गया। उसको तो कुछ समझ में ही नहीं आया क्योंकि उसको तो यह सब कुछ पता ही नहीं था।

तब नौजवान ने अपनी जेब से एक रूमाल निकाला जिसमें वह सातों जीभ रख कर लाया था और वह रूमाल राजा के पैरों पर रख दिया। फिर उसने राजा को अपनी लड़ाई का पूरा हाल बताया।

फिर भी उस कोयले वाले आदमी ने हार नहीं मानी। उसने कहा — "अगर यह जीभें इन्हीं मुँहों की हैं तो वह नौजवान उनको इन मुँहों के अन्दर रख कर दिखाये।"

सो उस नौजवान ने एक एक करके उन मुँहों में जीभ रखनी शुरू की। जैसे जैसे वह एक एक जीभ उन मुँहों में रखता गया उस

कोयला बेचने वाले आदमी ने अपने नीचे से एक एक गद्दी निकाल कर बाहर फेंकनी शुरू कर दी।

जब उस नौजवान ने सातवीं जीभ सातवें मुँह में रखी तो वह कोयले वाला आदमी तो इतना नीचा हो गया कि वह किसी को दिखायी भी नहीं दे रहा था क्योंकि वह मेज के नीचे तक पहुँच गया था। बस वह वहाँ से भाग लिया।

पर राजा के हुकुम से उसको पकड़ लिया गया और उसको शहर के चौराहे पर फाँसी चढ़ा दिया गया।

अब राजा, दुलहिन, दुलहा और मेहमान सब लोग खुशी खुशी खाना खाने और शादी की रस्में पूरी करने बैठे। शादी हो गयी।

X X X X X X X

रात हो गयी और सभी सोने चले गये। सुबह को जब वह नौजवान सो कर उठा तो उसने खिड़की खोली। बाहर झाँका तो उसको अपने सामने एक बहुत बड़ा जंगल दिखायी दिया जिसमें बहुत सारी चिड़ियें चहचहा रही थीं।

उस जंगल को देख कर उसे लगा कि इस जंगल में उसको शिकार के लिये जरूर जाना चाहिये।

उसकी पत्नी ने उसको बहुत मना किया कि वह शिकार के लिये वहाँ न जाये क्योंकि वह जंगल जादुई था। जो कोई भी उस जंगल में जाता था वह फिर वहाँ से कभी घर वापस नहीं आता था।

पर जितना ही वह नौजवान उस जंगल के बारे में सुनता जाता उसको वहाँ के खतरों से खेलने की इच्छा और बढ़ती जाती थी।

सो उसने अपना घोड़ा लिया, कुत्ता लिया और अपनी तलवार और बन्दूक ली और शिकार के लिये चल दिया।

वहाँ जा कर उसने बहुत सारी चिड़ियें मारीं कि तभी वहाँ गरज और बिजली की चमक के साथ एक बहुत बड़ा तूफान आ गया और ज़ोर से बारिश होने लगी।

बारिश इतनी ज़्यादा थी कि वह पूरा का पूरा भीग गया। साथ में ॲधेरा होने की वजह से वह उस जंगल में रास्ता भी भूल गया। कि तभी उसको एक गुफा दिखायी दी। उस तूफान से बचने के लिये वह उस गुफा में घुस गया।

उस गुफा के अन्दर संगमरमर की बहुत सारी मूर्तियाँ भिन्न भिन्न मुद्राओं में खड़ी हुई थीं। पर वह नौजवान इतना ज़्यादा थका हुआ था कि इस सब पर ध्यान देने का उसके पास समय ही नहीं था।

अपने आपको गरम करने के लिये उसने कुछ लकड़ियाँ इकट्ठी की और चकमक पत्थर[23] की सहायता से आग जला ली। उसकी गरमी में उसने अपने कपड़े भी सुखाये और खाने के लिये कुछ चिड़ियाँ भी भूनी।

[23] Translated for the word "Flintstone". When these stones are hit at each other they produce fire a fire can be started from them.

तभी एक बुढ़िया भी पानी से बचने के लिये उस गुफा में आ गयी। वह भी बहुत भीगी हुई थी। ठंड के मारे उसके दाँत किटकिटा रहे थे। उसने उस नौजवान से प्रार्थना की कि वह उसे अपनी आग के पास बैठने दे।

नौजवान ने कहा — "हाँ हाँ क्यों नहीं। आप यहाँ आराम से बैठें।"

वह बुढ़िया वहाँ बैठ गयी। उसने उस नौजवान को उसकी भुनी हुई चिड़ियों के लिये नमक और घोड़े के खाने के लिये भूसा दिया। एक हड्डी कुत्ते के लिये और तलवार को चिकना करने के लिये चिकनाई भी दी।

पर जैसे ही उस नौजवान ने उस बुढ़िया की नमक लगी चिड़िया खायी, उसके घोड़े ने भूसा खाया और उसके कुत्ते ने हड्डी खायी और तलवार को चिकनाई लगी सब मूर्तियों में बदल गये।

उधर राजकुमारी अपने पति के लौटने का इन्तजार करती रही पर फिर सोच लिया कि शायद वह मर गया होगा। राजा के हुकुम से सारा शहर दुख में डूब गया।

XXXXXXX

इस बीच उस मछियारे के घर में जबसे वह सबसे बड़ा लड़का घर छोड़ कर गया था उसका पिता और उसके दोनों छोटे भाई रोज उस

गौल ब्लैडर की तरफ देखते रहते जो एक लट्ठे से छत से लटका हुआ था।

एक दिन उन्होंने देखा कि रसोई के फर्श पर खून पड़ा है जो गौल ब्लैडर से टपक रहा था।

इस पर दूसरे वाले लड़के ने कहा — "मेरा बड़ा भाई या तो मर गया है या फिर किसी मुश्किल में है। मैं उसको देखने जाता हूँ।"

और विदा कह कर वह भी अपने घोड़े पर चढ़ा, अपना कुत्ता साथ लिया, तलवार और बन्दूक उठायी और चल दिया।

रास्ते में वह लोगों से पूछता गया कि अगर किसी ने उसके भाई को देखा हो। वह उनसे पूछता — "क्या तुमने किसी ऐसे आदमी को देखा है जो देखने में मेरे जैसा लगता हो?"

जो भी उसका यह सवाल सुनता हॅसता — "यह तो बड़ा अच्छा मजाक है। क्या तुम वही नहीं हो जो यहॉ कुछ दिन पहले घोड़े पर चढ़ कर आये थे?"

इससे उस बीच वाले लड़के को कम से कम यह पता चल गया कि उसका बड़ा भाई इधर आया था सो वह उसी दिशा में चलता रहा।

चलते चलते वह भी उसी राजा के शहर में आ निकला जिसमें उसके भाई ने सात सिरों वाला राक्षस मारा था। वहॉ उसने देखा कि शहर के सब लोग काली पोशाक पहने घूम रहे हैं।

लेकिन जब शहर वालों ने उसे देखा तो वे खुशी से चिल्लाये — "अरे यह तो यह आ गया। अरे यह तो यह आ गया। यह तो मरा नहीं है। हमारा राजकुमार ज़िन्दाबाद।"

वह उसे पकड़ कर राजा के पास उसके दरबार में ले गये। राजकुमारी भी वहीं बैठी थी। सबने उसको सबसे बड़ा लड़का ही समझा।

राजा ने उसको इतने दिन तक बिना कुछ बताये गायब रहने के लिये बहुत डॉटा। इस बीच वाले लड़के ने भी बिना परेशान हुए राजा से माफी मॉगी और राजकुमारी से भी सुलह कर ली।

उन सबके सवालों के जवाब उसने इतनी अच्छी तरह से दिये कि उसको अपने भाई के बारे में सब पता चल गया – उसकी शादी के बारे में, उसके गायब होने के बारे में आदि आदि।

उस रात जब वह बीच वाला लड़का सोने के लिये गया तो उसने म्यान में से अपनी तलवार निकाल कर उसका फल ऊपर कर के बिस्तर के बीच में रख दी।

उसने राजकुमारी से कहा कि वह तलवार के एक तरफ सोयेगी और वह खुद उसके दूसरी तरफ सोयेगा। राजकुमारी की समझ में कुछ नहीं आया पर वे दोनों सोने चले गये और जल्दी ही सो गये।

वह सुबह भी जल्दी ही उठ गया और उठते ही खिड़की खोली। सामने जंगल देख कर उसको भी लगा कि उसको शिकार

के लिये जाना चाहिये। वह राजकुमारी से बोला — "मैं शिकार के लिये जाऊँगा।"

राजकुमारी बोली — "क्या एक बार वहॉ से बच कर आ जाना तुम्हारे लिये काफी नहीं है? क्या तुम मुझे और परेशान करना चाहते हो?"

पर उसने तो राजकुमारी की बात सुनी ही नहीं। वह भी अपने घोड़े पर चढ़ा, अपना कुत्ता साथ लिया और तलवार और बन्दूक उठायी और शिकार खेलने के लिये उस जंगल में चल दिया।

इसका भी वही हाल हुआ जो सबसे बड़े लड़के का हुआ था। वे सब भी उसी गुफा में मूर्ति बन कर खड़े हो गये।

इस बार राजकुमारी को लगा कि उसका पति सचमुच ही मर गया है और राजा के हुकुम से एक बार फिर सारा शहर शोक और दुख में डूब गया।

इस बीच उस मछियारे के घर में उसकी रसोई में उस गौल ब्लैडर से एक बार फिर खून टपक पड़ा।

क्योंकि उन तीनों लड़कों का पिता और सबसे छोटा लड़का उस गौल ब्लैडर को बराबर देख रहे थे सो उस खून के टपकते ही वह तीसरा लड़का भी तुरन्त ही अपने घोड़े पर सवार हुआ।

उसने भी अपने कुत्ते को साथ लिया, अपनी तलवार और बन्दूक उठायी और अपने दोनों भाइयों की खोज में चल दिया।

वह भी रास्ते में पूछता जाता था — “क्या तुम लोगों ने बिल्कुल मेरे जैसे दो आदमी घोड़े पर सवार इधर से जाते देखे हैं?”

लोग उससे पूछते — “तुम कैसे हॅसोड़िये हो? तुम हम लोगों से कब तक बार बार यही सवाल पूछते रहोगे?”

इस जवाब से उसको यह विश्वास हो गया कि वह सही रास्ते पर जा रहा है। चलते चलते वह भी उसी राजा के शहर में आ पहुँचा। उसने भी देखा कि सारा शहर दुख और शोक में डूबा है और सब काले कपड़े पहने घूम रहे हैं।

पर उसको देखते ही लोग खुश हो गये और उसको राजा के पास ले गये। राजा भी उसको देख कर इतना खुश हो गया जैसे उसका अपना दामाद मर कर ज़िन्दा हो गया हो।

अपने भाई की तरह वह भी जब सोने गया तो उसने भी बिस्तर के बीच में अपनी नंगी तलवार उसका फल ऊपर करके खड़ी कर दी और वे दोनों तलवार के दो तरफ सो गये।

वह भी सुबह जल्दी ही उठ गया और सुबह उठते ही उसने भी खिड़की खोली और जब अपने सामने जंगल फैला हुआ देखा तो उसने भी कहा कि वह शिकार खेलने जाना चाहता है।

यह सुन कर राजकुमारी अबकी बार तो बहुत ही दुखी हो गयी और रो कर बोली — “क्या तुमने मरने की कसम खा रखी है? तुम मुझे प्यार करते हो या नहीं? तुम्हें पता है जब भी तुम शिकार पर जाते हो मुझे हमेशा तुम्हारे मरने का डर लगा रहता है।”

पर यह तीसरा लड़का तो घर से बाहर निकलने के लिये बेचैन हो रहा था क्योंकि उसको तो अपने भाइयों को ढूँढना था।

सो उसने उसकी कोई बात नहीं सुनी और शिकार खेलने चल दिया। जब वह जंगल में निकला तो उसके साथ भी वही हुआ जो उसके दो बड़े भाइयों साथ हुआ था। उसने भी तूफान से बचने के लिये उसी गुफा में शरण ली।

वहाँ उस गुफा में इतनी सारी मूर्तियाँ देख कर वह आश्चर्य में पड़ गया। उसने एक एक करके जो उन मूर्तियों को देखना शुरू किया तो उसने उनमें से अपने दोनों भाइयों को पहचान लिया।

वहाँ का हाल देख कर उसको लगा कि यहाँ जरूर कुछ गड़बड़ है। मुझे यहाँ सँभल कर रहना होगा।

उसने भी वहाँ अपनी चिड़ियाँ भूनने के लिये आग जलायी और चिड़ियों को उसमें भूनने के लिये रख दिया। तभी वह बुढ़िया वहाँ आयी और झुकते हुए नम्रता से उससे आग के पास बैठने की इजाज़त माँगी।

पर इस लड़के ने उसको डाँटा — "दूर हट ओ बदसूरत जादूगरनी, मैं तुझे अपने पास भी नहीं बिठाना चाहता।" उस बुढ़िया को उस लड़के का ऐसा बरताव देख कर बहुत दुख हुआ।

वह कुछ भुनभुना कर बोली — "क्या तुम्हारे मन में इन्सान के लिये ज़रा सा भी प्यार नहीं है? तुम कैसे आदमी हो? कोई बात नहीं

पर फिर भी मैं तुम्हारे खाने को स्वादिष्ट बनाने के लिये तुमको कुछ चीज़ें देना चाहती हूँ।

नमक तुम्हारी भुनी हुई चिड़ियों के लिये, भूसा तुम्हारे घोड़े के लिये और एक हड्डी तुम्हारे कुत्ते के लिये। और थोड़ी चिकनाई तुम्हारे हथियार को जंग लगने से बचाने के लिये।"

वह लड़का उस बुढ़िया पर चिल्लाया — "ओ बुढ़िया, तू यहाँ से जाती है या नहीं या फिर मैं तुझे मार कर भगाऊँ? तू मुझे नहीं पकड़ सकती, सुना तूने?" और यह कह कर वह उस पर कूद गया। उसको जमीन पर गिरा कर उसने उसको अपने घुटने से वहीं नीचे ही दबाये रखा।

फिर अपने बाँये हाथ से उसने उसका गला दबाया और दाँये हाथ से अपनी तलवार निकाल कर उसकी नोक उसकी गरदन पर रख कर कहा — "ओ नीच जादूगरनी, मेरे भाई मुझे वापस कर नहीं तो मैं अभी तेरा गला काट दूँगा।"

बुढ़िया बोली कि उसने कभी किसी का कोई बुरा नहीं किया। पर जब उस लड़के की तलवार की नोक को अपने गले पर महसूस किया तो उसने अपना जादू मान लिया। और उससे वायदा किया कि अगर वह उसको छोड़ देगा तो वह उसकी बात मान लेगी।

लड़के ने उसको छोड़ दिया। बुढ़िया ने अपनी जेब से एक मरहम निकाला और उसको उन सबकी मूर्तियों पर लगा कर उन सबको ज़िन्दा कर दिया।

पर उस लड़के ने उसको तब तक नहीं जाने दिया जब तक कि उसने वहाँ रखी सब मूर्तियों को ज़िन्दा नहीं कर दिया। इस तरह सारी मूर्तियाँ एक एक करके ज़िन्दा हो गयीं और वह गुफा बहुत सारे लोगों से भर गयी।

जब भाइयों ने एक दूसरे को देखा तो वे खुशी से एक दूसरे के गले लग गये। जब कि दूसरे लोग बेचारे खुशी के मारे बोल ही नहीं पा रहे थे। वे उस तीसरे भाई के बहुत ऋणी थे।

इस बीच वह जादूगरनी वहाँ से खिसक ली पर उन तीनों भाइयों ने उसको पकड़ लिया और काट कर उसके टुकड़े टुकड़े कर दिये। उस जादूगरनी के मरते ही उस जंगल का जादू टूट गया।

सबसे बड़े भाई ने उस जादूगरनी के मरहम की वह बोतल ले ली जिससे मुर्दा भी ज़िन्दा हो जाते थे।

उसके बाद वे सब राजा के शहर वापस आ गये। शहर के सारे लोग उनके बारे में बात कर रहे थे और वे आपस में अपने बारे में बात कर रहे थे कि उनके साथ क्या हुआ।

जब बड़े भाई ने यह सुना कि उसके दोनों भाई उसकी पत्नी के पलंग पर लेटे थे तो उसने गुस्से में आ कर उन दोनों को अपनी तलवार से मार डाला। पर तुरन्त ही उसको उनके मारने का पछतावा हुआ और उसने अपने आपको मारने के लिये तलवार अपने गले पर रखी।

दूसरे लोगों ने उसको ऐसा करने से रोका तो उसको वह मरहम वाली बोतल याद आयी। उसने तुरन्त ही वह मरहम अपने भाइयों को लगाया और वे ज़िन्दा हो गये।

सबसे बड़ा भाई अपने दोनों छोटे भाइयों को ज़िन्दा देख कर बहुत खुश हुआ और उसने उनसे अपने किये की माफी मॉगी।

तब उसके भाइयों ने उसको बताया कि वे अपने और उसकी पत्नी के बीच में तलवार लगा कर सोये थे इसलिये ऐसा कुछ नहीं था जैसा कि वह सोच रहा था। उनको अफसोस था कि यह बात वे उसको पहले नहीं बता पाये थे।

बातें करते करते वे राजा के महल आ गये। वहॉ आ कर उन्होंने राजकुमारी को बुलाया। राजकुमारी रोती हुई आयी तो उसने वहॉ तीन एक से भाइयों को खड़े देखा तो कुछ बोल ही नहीं सकी।

वह तो यह भी नहीं पहचान सकी कि उन तीनों में से उसका पति कौन सा था। तब सबसे बड़े लड़के ने कहा कि वही उसका पति था और फिर उसने अपने दोनों छोटे भाइयों का उससे परिचय कराया।

राजा ने अपने दामाद के दोनों छोटे भाइयों की शादी दो कुलीन सभासदों की दो बेटियों से कर दी। उन सभासदों को अपना दरबारी बना लिया और उस बूढ़े मछियारे और उसकी पत्नी को भी वहीं बुला लिया।

6 मार्या मोरेवना[24]

पेड़ लगाने की लोक कथाओं की यह लोक कथा रूस की लोक कथाओं से ली गयी है। इसमें राजकुमार पेड़ तो नहीं लगाता पर अपने बरतन छोड़ जाता है। जब वे काले पड़ने लगते हैं तो उसके रिश्तेदारों को पता चल जाता है कि वह किसी तकलीफ में है और उसको सहायता की जरूरत है।

एक बहुत दूर जगह में एक बहुत दूर देश में एक आदमी रहता था जिसका नाम था इवान ज़ारेविच[25]। उसके तीन बहिनें थीं – मैरी ज़ारेविच, ओल्गा ज़ारेविच और अन्ना ज़ारेविच[26]।

समय गुजरता गया और उनके माता पिता दोनों मर गये। जब वे मर रहे थे तो उन्होंने अपने बेटे से कहा — "बेटा तुम अपनी बहिनों को उस पहले आदमी को दे देना जो सबसे पहले उनका हाथ माँगे। उनको घर पर बिठा कर मत रखना।" इवान ने अपने माता पिता को दफ़न कर दिया।

एक दिन वह अपनी तीनों बहिनों के साथ बागीचे में घूमने के लिये गया।

---

[24] Marya Morevna – a folktale from Russia, Asia. Adapted from the Book : "Russian Folk-Tales". Translated by Robert Chandler. Boulder (CO), Shambhala. 1980. 67 p.

[25] Ivan Tzarevich – the name of a man – Tzarevich means "the child of Tzar"

[26] Mary Tzarevich, Olga Tzarevich ad Anna Tzarevich – the names of the three sisters of Ivan Tzarevich

अचानक एक काला बादल उनके सिर के ऊपर आ गया और उसके साथ ही बड़े ज़ोर का तूफान भी आ गया। इवान बोला — “जल्दी करो बहिनों हम लोगों को जल्दी ही अन्दर चलना चाहिये।”

जैसे ही वे महल में घुसे तो गरज की आवाज सुनायी दी। कमरे की छत फट गयी और एक चमकीला बाज़[27] कमरे में आ गया। वह सीधे फर्श पर गया और एक सुन्दर लड़ने वाले में बदल गया।

वह बोला — “गुड डे इवान ज़ारेविच। मैं पहले एक मेहमान की तरह से आया था पर अब मैं एक उम्मीदवार की हैसियत से आया हूँ। मैं तुम्हारी बहिन मैरी ज़ारेविच का हाथ माँगने आया हूँ।”

इवान बोला — “अगर मेरी बहिन चाहती है तो मैं रास्ते में नहीं आऊँगा। भगवान तुम दोनों को सुखी रखे।” मैरी राजी हो गयी। उस बाज़ ने मैरी से शादी कर ली और उसको अपने राज्य ले कर चला गया।

घंटों पर घंटे निकलते गये, दिनों पर दिन निकलते गये और फिर एक साल कब निकल गया पता ही नहीं चला।

एक बार फिर इवान और उसकी बहिनें बागीचे में घूमने गये। तो एक बार फिर एक काला बादल आया, एक बार फिर एक

[27] Translated for the word “Falcon” – see its picture above.

तूफान उठा और एक बार फिर बिजली चमकी। और एक बार फिर इवान अपनी बहिनों के साथ अन्दर महल में चला गया।

जैसे ही वे महल के अन्दर घुसे गरज की आवाज आयी और छत फाड़ता हुआ एक गरुड़[28] उसमें से अन्दर घुसा। वह भी फर्श की तरफ उड़ा और एक बहुत सुन्दर लड़ने वाले नौजवान में बदल गया।

वह बोला — "गुड डे इवान। मैं यहाँ पहले एक मेहमान की तरह आया था और अब एक उम्मीदवार की हैसियत से आया हूँ। मैं तुम्हारी बहिन ओल्गा का हाथ माँगने आया हूँ।"

इवान ने उसको भी वही जवाब दिया जो उसने पहले उम्मीदवार को दिया था — "अगर मेरी बहिन राजी है तो मैं रास्ते में नहीं आऊँगा। भगवान तुम दोनों को सुखी रखे।" ओल्गा राजी हो गयी। उस गरुड़ ने ओल्गा से शादी कर ली और उसको अपने राज्य ले कर चला गया।

इसके बाद तीसरा साल निकल गया। इवान ने अपनी सबसे छोटी बहिन से कहा — "चलो, बागीचे में घूमने चलते हैं।"

सो वे दोनों बागीचे में घूमने चले गये। वे लोग थोड़ी ही देर वहाँ घूमे होंगे कि एक बार फिर एक काला बादल आया, एक बार फिर एक तूफान उठा और एक बार फिर एक बिजली चमकी।

[28] Translated for the word "Eagle" – see its picture above.

एक बार फिर इवान अपनी बहिन अन्ना के साथ अन्दर महल में चला गया। जैसे ही वे महल के अन्दर घुसे गरज की आवाज आयी और छत फाड़ता हुआ एक रैवन[29] अन्दर आया।

वह भी फर्श की तरफ उड़ा और एक सुन्दर लड़ने वाले नौजवान में बदल गया। पहले दो लड़ने वाले भी काफी सुन्दर थे पर वे इसके मुकाबले में कुछ भी नहीं थे।

वह बोला — "गुड डे इवान। मैं यहाँ पहले एक मेहमान की तरह आया था और अब एक उम्मीदवार की हैसियत से आया हूँ। मैं तुम्हारी बहिन अन्ना का हाथ माँगने आया हूँ।"

इवान ने उसको भी वही जवाब दिया जो उसने पहले दो उम्मीदवारों को दिया था — "अगर मेरी बहिन राजी है तो तुम उससे शादी कर सकते हो। मैं रास्ते में नहीं आऊँगा। भगवान तुम दोनों को सुखी रखे।"

अन्ना राजी हो गयी और उस रैवन ने अन्ना से शादी कर ली और उसको अपने राज्य ले कर चला गया।

इवान अगले पूरे साल अकेला ही रहा सो वह दुखी हो गया। एक दिन उसने सोचा कि वह अपनी बहिनों से मिल कर आता है।

---

[29] Raven is a crow-like bird – see its picture above.

सो वह अपनी बहिनों से मिलने चल दिया। चलते चलते उसको एक बड़ा शानदार कैम्प दिखायी दे गया।उस कैम्प की मालकिन मार्या मोरेवना[30] उससे मिलने के लिये बाहर आयी।

"गुड डे इवान ज़ारेविच। तुम कहाँ जा रहे हो? क्या तुम अपनी मरजी से ऐसे ही जा रहे हो या फिर तुमको किसी चीज़ की जरूरत है?"

इवान बोला — "मैं एक आजाद आदमी हूँ। मैं वही करता हूँ जो मैं चाहता हूँ।"

मार्या बोली — "तब तुम अन्दर आओ और मेरे साथ कुछ समय रहो।"

इवान खुशी से राजी हो गया। वह वहाँ दो रात रहा। मार्या को उससे प्रेम हो गया तो उन दोनों ने शादी करली। मार्या उसको अपने राज्य ले गयी। वे वहाँ कुछ समय तक खुशी खुशी रहे।

फिर मार्या को लड़ाई को लिये जाना पड़ा। उसने अपना सब कुछ इवान को सौंपा और बस इतना कहा — "तुम जहाँ भी जाना चाहो जाना, तुम जो कुछ भी देखना चाहो देखना पर एक चीज़ तुम कभी नहीं करना और वह यह कि इस भंडारघर का दरवाजा कभी नहीं खोलना।"

अब इवान तो ऐसा ही था जैसे हम सब लोग होते हैं सो जैसे ही मार्या वहाँ से गयी वह तुरन्त ही उस भंडारघर की तरफ भागा

[30] Marya Morevna – name of the would be wife of Ivan Tzarevich

गया जिसका दरवाजा मार्या ने उसको खोलने से मना किया था। उसने उसका दरवाजा खोला और अन्दर झॉका।

वहॉ कोश्चेव लटका हुआ था जिसे कभी मौत नहीं आती[31]। वह वहॉ बारह लोहे की जंजीरों से बॅधा हुआ था।

कोश्चेव उसको देखते ही बोला — "मुझ पर दया करो। मुझे कुछ पीने के लिये दो। मैं यहॉ बिना खाना खाये और बिना पानी पिये दस साल से लटका हुआ हूॅ। मेरा गला तो बिना पानी के बिल्कुल रेगमार[32] हो गया है।"

इवान उसके लिये एक बालटी पानी ले कर आया और उसे पीने के लिये दिया। कोश्चेव ने उसे एक ही घूॅट में पी लिया और बोला — "मुझे एक बालटी से ज़्यादा पानी चाहिये। मुझे एक बालटी पानी और ले कर आओ।"

इवान उसके लिये एक बालटी पानी और ले आया। कोश्चेव उस पानी को भी पी गया। फिर उसने तीसरी बालटी पानी मॉगा। इवान ने उसको तीसरी बालटी पानी भी ला दिया।

जैसे ही उसने वह तीसरी बालटी पानी पिया तो उसकी सारी पुरानी ताकत वापस आ गयी। उसने अपना शरीर एक बार हिलाया और अपनी बारहों जंजीरें तोड़ दीं।

[31] Koshchev the Deathless – he was one of the friends of Baba Yaga

[32] Translated for the word "Sandpaper".

कोश्चेव बोला — "तुम बहुत दयालु हो। पर मुझे डर है कि अब तुम मार्या को फिर कभी नहीं देख सकोगे। तुम उसको उसी तरह नहीं देख सकोगे जैसे तुम अपने कान नहीं देख सकते।"

फिर वह हवा का एक झोंका बना और खिड़की से बाहर चला गया। उसने मार्या को ढूँढ लिया और उसको उठा कर अपने घर ले गया।

इवान बहुत रोया बहुत रोया। बाद में उसने अपने आँसू पोंछे और अपनी यात्रा पर जाने के लिये तैयार हुआ। दो दिन तक चलने के बाद तीसरे दिन सुबह वह एक बहुत ही बढ़िया महल के पास आया।

उस महल के पास एक ओक का पेड़[33] खड़ा था जिस पर एक चमकीला बाज़ बैठा था। इवान को देखते ही उस बाज़ ने उस पेड़ पर से सीधी जमीन की तरफ एक कूद लगायी और एक सुन्दर लड़ने वाला नौजवान बन गया।

आदमी बन कर वह बोला — "भाई साहब, आप कैसे हैं और दुनियाँ में क्या कुछ नया हो रहा है?"

इतने में राजकुमारी मैरी भी बाहर दौड़ी आ गयी। वह अपने भाई के गले लग गयी और उसका सारा हाल पूछने लगी कि वह कैसा रहा। फिर उसने उसको अपने बारे में बताया।

[33] Oak Tree – a kind of large shady tree

इवान उसके घर तीन दिन रहा फिर बोला — "मुझे अफसोस है बहिन कि मैं तुम्हारे घर और ज़्यादा नहीं ठहर सकता क्योंकि मुझे अपनी पत्नी सुन्दर मार्या मोरेवना को ढूँढना है।"

बाज़ बोला — "वह आपको इतनी आसानी से नहीं मिलेगी भाई साहब। आप कम से कम यहाँ अपनी चाँदी की चम्मच छोड़ते जाइये। इससे हम आपको याद करते रहेंगे। भगवान आपको आपकी मार्या को ढूँढने में मदद करे।"

इवान ने अपनी चाँदी की चम्मच वहाँ छोड़ दी और अपनी यात्रा पर आगे चल दिया।

इवान फिर दो दिन चला और तीसरे दिन एक और सुन्दर महल के पास आया। यह महल उस पहले वाले महल से भी ज़्यादा सुन्दर था।

इस महल के पास भी एक ओक का पेड़ था और इस पेड़ पर एक गरुड़ बैठा था। इवान को देख कर उसने भी वहाँ से सीधी जमीन की तरफ एक कूद लगायी और एक सुन्दर लड़ने वाला नौजवान बन गया।

उसने आवाज लगायी — "ओ ओल्गा, जल्दी से बाहर आओ, देखो तुम्हारा भाई आया है।"

ओल्गा तुरन्त ही बाहर दौड़ी आयी और अपने भाई को गले लगा कर उससे उसका हाल पूछा फिर उसने उसको अपने बारे में बताया।

इवान यहाँ भी तीन दिन ठहरा और फिर बोला — "मुझे अफसोस है बहिन कि मैं तुम्हारे घर और ज़्यादा नहीं ठहर सकता क्योंकि मुझे अपनी पत्नी सुन्दर मार्या मोरेवना को ढूँढना है।"

गरुड़ भी वही बोला जो बाज़ ने उससे कहा था — "वह आपको इतनी आसानी से नहीं मिलेगी भाई साहब। आप कम से कम अपना चाँदी का काँटा यहाँ छोड़ते जाइये शायद हमें इसकी कभी जरूरत पड़ जाये। भगवान आपको आपकी मार्या को ढूँढने में मदद करे।"

इवान ने अपना चाँदी का काँटा वहाँ छोड़ा और अपनी यात्रा पर आगे चल दिया।

वह फिर दो दिन चला तो तीसरे दिन की सुबह को उसको फिर एक महल दिखायी दिया। यह महल उस दूसरे महल से भी ज़्यादा सुन्दर और शानदार था। इस महल के पास भी एक ओक का पेड़ खड़ा था और इस ओक के पेड़ पर एक रैवन बैठा था।

रैवन ने इवान को देखा तो उसने भी पेड़ से सीधी जमीन की तरफ एक कूद लगायी और एक सुन्दर लड़ने वाला नौजवान बन गया। वह ज़ोर से बोला — "अन्ना, यहाँ आओ, देखो तुम्हारा भाई आया है।"

अन्ना तुरन्त ही बाहर दौड़ी आयी और भाई को गले लगाया और उससे उसका सारा हाल पूछा और फिर उसको अपना हाल बताया।

इवान यहाँ भी तीन दिन ठहरा और फिर बोला — "मुझे अफसोस है बहिन कि मैं तुम्हारे घर और ज़्यादा नहीं ठहर सकता क्योंकि मुझे अपनी पत्नी सुन्दर मार्या मोरेवना को ढूँढना है।"

रैवन बोला — "वह आपको इतनी आसानी से नहीं मिलेगी भाई साहब। आप कम से कम अपनी चाँदी का सुँघनी वाला बक्सा यहाँ छोड़ते जाइये। इसको देख कर हम आपको याद करते रहेंगे। भगवान आपको आपकी मार्या को ढूँढने में मदद करे।"

इवान ने अपना चाँदी का सुँघनी वाला बक्सा वहाँ छोड़ा और उनको गुड बाई कह कर फिर अपनी यात्रा पर आगे चल दिया।

वह फिर दो दिन चला। तीसरे दिन की सुबह उसको मार्या मोरेवना मिल गयी। जैसे ही उसने इवान को देखा तो वह बहुत खुश हुई और खुशी के मारे रो पड़ी।

वह बोली — "इवान, तुमने मेरी बात क्यों नहीं सुनी? तुमने उस भंडारघर का दरवाजा खोला ही क्यों और कोश्चेव को बाहर निकाला ही क्यों?"

इवान बोला — "मुझे माफ कर दो मार्या। पर अब उस बीती बात पर रोने से क्या फायदा। अब तुम बस मेरे साथ चलो, जल्दी से, इससे पहले कि कोश्चेव आ जाये।"

दोनों तैयार हुए और वहाँ से चल दिये। कोश्चेव उस दिन शिकार के लिये गया हुआ था। वह जब शाम को वापस लौट रहा था तो रास्ते में उसका घोड़ा ठोकर खा कर गिर पड़ा।

"अरे तुमको क्या हो गया है? क्या घर में कुछ गड़बड़ है?"

घोड़ा बोला — "इवान आया है और वह मार्या को ले गया है।"

कोश्चेव ने पूछा — "क्या तुम उनको पकड़ सकते हो?"

घोड़ा बोला — "अगर तुमको कोई खेत बोना हो, जैसे गेंहू का खेत, तो पहले उसके बीज बोने के बाद पौधों के उगने का इन्तजार करो, फिर उसे काटो, फिर उसमें से भूसा निकालो।

फिर उसके दानों का आटा बनाओ, फिर उस आटे की पाँच ओवन भर कर डबल रोटियाँ बनाओ, फिर उन डबल रोटियों को खाओ तब कहीं बाहर जाने के लिये निकलो – तब भी पता नहीं कि हम उनको पकड़ सकें या नहीं।"

कोश्चेव ने घोड़े को एड़ लगायी और दौड़ चला। उसने जल्दी ही इवान को पकड़ लिया।

उसने इवान से कहा — "मैं तुमको एक बार माफ कर सकता हूँ क्योंकि तुमने एक बार मुझे पानी पिलाया था। मैं तुमको दोबारा भी माफ कर दूँगा क्योंकि तुमने मुझे दूसरी बार पानी पिलाया था पर तीसरी बार मैं तुम्हारे टुकड़े टुकड़े कर दूँगा।"

कह कर उसने इवान से मार्या को लिया और उसको घर वापस ले आया। इवान बेचारा एक पत्थर पर बैठ गया और रोने लगा।

वह वहाँ बैठा बैठा काफी देर तक रोता रहा। कुछ देर बाद वह फिर से मार्या को लाने के लिये चल दिया। कोश्चेव उस समय बाहर गया हुआ था।

"चलो मार्या।"

"पर इवान वह हमको बहुत जल्दी पकड़ लेगा।"

"पकड़ लेता है तो पकड़ लेने दो। हम लोग कम से कम एक दो घंटे तो एक साथ गुजार लेंगे।" और वे दोनों वहाँ से फिर चल दिये।

शाम को जब कोश्चेव घर लौट रहा था तो उसका घोड़ा फिर से ठोकर खा कर गिर गया।

कोशचेव बोला — "तुमको क्या हो गया है? क्या घर में फिर कुछ गड़बड़ है?"

"इवान आया है और मार्या को ले गया है।"

"क्या तुम उसको पकड़ सकते हो?"

"अगर तुमको जौ का खेत बोना हो, तो पहले उसके बीज बोने के बाद पौधों के उगने का इन्तजार करो, फिर उसे काटो, फिर उसमें से भूसा निकालो।

फिर उससे बीयर बनाओ, फिर उसको पी कर धुत हो जाओ फिर सोओ और तब कहीं बाहर जाने के लिये निकलो – तब भी पता नहीं कि हम उनको पकड़ सकें या नहीं।"

कोश्चेव ने फिर अपने घोड़े को एड़ लगायी और दौड़ चला। बहुत जल्दी ही उसने इवान को फिर से पकड़ लिया — "मैंने तुमको पहले ही कहा था इवान कि तुमको मार्या को देखना इतना ही मुश्किल होगा जितना कि अपने कान देखना।"

इतना कह कर उसने मार्या को उठाया और उसको ले कर घर आ गया और इवान वहाँ फिर वहीं अकेला बैठा रह गया। वह फिर वहाँ बैठा बैठा काफी देर तक रोता रहा।

पर एक बार फिर वह मार्या को लेने जा पहुँचा। इत्तफाक से उस बार फिर कोश्चेव शिकार के लिये गया हुआ था।

"चलो मार्या।"

"पर इवान इस बार तो वह तुम्हारे टुकड़े टुकड़े कर देगा।"

"करने दो पर मैं तुम्हारे बिना नहीं रह सकता।"

सो वे फिर तैयार हुए और फिर वहाँ से चल दिये।

पर शाम को लौटते हुए कोश्चेव का घोड़ा फिर से ठोकर खा कर गिर पड़ा।

कोश्चेव बोला — "तुमको क्या हो गया है? क्या घर में कुछ गड़बड़ है?"

"इवान आया है और मार्या को ले गया है।"

कोश्चेव ने फिर अपने घोड़े को एड़ लगायी और उसे दौड़ा कर इवान को बहुत जल्दी ही पकड़ लिया।

वहाँ पहुँच कर उसने इवान के छोटे छोटे टुकड़े किये, उनको एक बैरल[34] में भरा, बैरल के मुँह को गोंद से बन्द किया, बैरल को लोहे के छल्लों से बाँधा और समुद्र में फेंक दिया। और मार्या को ले कर चला आया।

उसी समय इवान अपनी जो चाँदी की चीज़ें अपने तीनों जीजाओं के पास छोड़ आया था वे सब काली पड़ गयीं।

उनको काला पड़ते देखते ही वे सब चिल्लाये — "अरे ऐसा लगता है कि इवान के साथ कुछ खराब हो गया है।"

गरुड़ तुरन्त ही नीले समुद्र की तरफ उड़ गया। उसने उसमें से वह बैरल निकाला और उसको किनारे पर ले आया। बाज़ उड़ा और "ज़िन्दगी का पानी" ले आया और रैवन "मौत का पानी" लाने के लिये उड़ गया।

तीनों चिड़ियों ने उस बैरल को तोड़ा, उसमें से इवान के शरीर के सारे टुकड़े निकाले, उनको अच्छी तरह से धोया और फिर से उनको उनकी जगह पर लगा दिया।

रैवन ने उन टुकड़ों पर मौत का पानी छिड़का तो उसके वे सब टुकड़े एक साथ जुड़ गये। बाज़ ने उस शरीर के ऊपर ज़िन्दगी का

---

[34] Barrel – a barrel is a hollow cylindrical container traditionally made of wooden staves bound by ,wooden or metal hoops. It has a standard size – in UK it is 36 Imperial gallons (160 L, 43 US Gallons). Modern barrels are made of US Oak wood and measure 59, 60 and 79 US Gallons. A US Gallon is 3.8 Liter and an Imperial Gallon is 4.5 Liter – see its picture above.

पानी छिड़का तो इवान ने साँस ली और वह उठ कर खड़ा हो गया और बोला — "ओह मेरे भगवान मुझे लगता है कि मैं कई दिनों तक सोता रहा।"

उसके तीनों जीजा एक साथ बोले — "तुम तो कई दिनों से भी ज़्यादा दिनों तक सोते रहते अगर हम न होते। तुम्हारी छोड़ी हुई तीनों चीज़ों ने काली पड़ कर हमें बता दिया कि तुम्हारे साथ कुछ गड़बड़ हो गयी है।

बस हम सब तुमको बचाने भागे और तुम्हें बचा लिया। अब तुम हमारे साथ चलो और कुछ दिन हमारे साथ रहो।"

इवान बोला — "नहीं मेरे जीजा लोगों अभी नहीं, मुझे आज ही जाना होगा, मुझे अभी भी मार्या को ढूँढना है।" और वह मार्या को लाने के लिये फिर चल दिया।

जब उसने मार्या को ढूँढ लिया तो उसने मार्या से कहा — "तुम पहले कोश्चेव को ढूँढो और उससे यह पता लगाओ कि उसको इतना अच्छा घोड़ा कहाँ से मिला।"

मार्या ठीक समय का इन्तजार करती रही और ठीक मौका मिलते ही उसने उससे यह पूछा कि उसको इतना अच्छा घोड़ा कहाँ से मिला।

कोश्चेव बोला — "यहाँ से एक तिहाई जमीन पार करके जमीन के चौथे हिस्से में आग की नदी के उस पार एक बाबा यागा रहती

है। उसके पास एक घोड़ी है जो उसको रोज एक बार दुनियाँ घुमाने ले जाती है।

उसके पास और भी बहुत सारे घोड़े घोड़ियाँ हैं। मैंने उसके पास तीन दिन रह कर उसके घोड़े घोड़ियों के चरवाहे का काम किया था। उस समय मैंने उसका एक भी घोड़ा नहीं खोया था। बस इसी बात से खुश हो कर उसने मुझे अपनी यह बच्ची घोड़ी[35] मुझे इनाम में दे दी थी।"

मार्या ने आश्चर्य से पूछा — "पर तुमने वह आग की नदी कैसे पार की?"

कोश्चेव बोला — "ओह वह नदी? उसको पार करने के लिये तो मेरे पास एक जादू का रूमाल है।

बस मुझे उसको अपने दाहिने कन्धे के ऊपर केवल तीन बार हिलाने की जरूरत पड़ती है और फिर वह एक ऊँचा पुल बन जाता है। वह पुल उन आग की लपटों को पार करके वहाँ तक पहुँचने के लिये काफी ऊँचा होता है।"

मार्या ने उसके कहे गये सारे शब्द बखूबी याद कर लिये और फिर उनको इवान को बता दिये।

[35] Translated for the word "Foal". Foal is a below one-year old horse's female child. After one year to three years they are called Colt (male) and Filly (female).

उसने कोश्चेव का रूमाल भी चुरा लिया। इवान ने उस रूमाल के सहारे वह आग की नदी पार की और बाबा यागा की खोज में चल दिया।

वह काफी दूर तक बिना खाये पिये चलता रहा। अब उसको भूख लग आयी थी। वह खाने के लिये इधर उधर कुछ ढूँढ रहा था कि तभी उसको समुद्र के ऊपर एक अजीब सी चिड़िया आती दिखायी दी।

उस चिड़िया के साथ उसके कुछ बच्चे भी थे तो इवान ने सोचा कि वह उनमें से एक बच्चे को खा कर अपनी भूख मिटायेगा।

पर वह चिड़िया बोली — "नहीं इवान नहीं। तुम मेरे बच्चे को छोड़ दो एक दिन मैं तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी।"

इवान ने उसके बच्चे को छोड़ दिया और आगे बढ़ गया। आगे जंगल में उसको शहद की मक्खियों का एक छत्ता मिला तो वह बोला "मैं थोड़ा सा शहद ही खा लेता हूँ।"

रानी मक्खी बोली — "नहीं इवान नहीं। मेरा शहद तो छूना भी मत। एक दिन मैं तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी।"

सो इवान ने शहद भी छोड़ा और आगे बढ़ गया। आगे चल कर उसको एक शेरनी मिली जो अपने बच्चों के साथ खेल रही थी। उसने कहा "मैं एक शेर का बच्चा ही खा लेता हूँ नहीं तो मैं तो अब भूख से मर ही जाऊँगा।"

शेरनी बोली — "नहीं नहीं इवान। मैं एक दिन तुम्हारी सहायता जरूर करूँगी। मेहरबानी करके मेरे बच्चे को मत खाओ।"

"ठीक है मैं तुम्हारे बच्चे को नहीं खाता पर तुम अपना वायदा याद रखना।"

इस तरह वह बेचारा भूखा ही घूमता रहा। काफी देर के बाद वह बाबा यागा के घर तक पहुँच सका। उसके घर के चारों तरफ बारह खम्भे लगे हुए थे। उन बारह खम्भों में से एक खम्भे के सिवा सभी खम्भों पर आदमियों की खोपड़ियाँ लगी हुई थीं।

इवान बोला — "गुड डे दादी माँ।"

"गुड डे इवान। तुम यहाँ क्या कर रहे हो? तुम यहाँ अपनी मरजी से आये हो या फिर किसी जरूरत से आये हो?"

"मैं आपके पास काम करने के लिये आया हूँ। मुझे आपकी एक छोटी घोड़ी चाहिये।"

"जैसी तुम्हारी मरजी। पर इसके लिये तुमको ज़्यादा काम करने की जरूरत नहीं है केवल तीन दिन ही काम करने की जरूरत है। अगर तुम मेरी घोड़ियों को ठीक से रखोगे तो तुमको एक घोड़ी मिल जायेगी।

पर अगर तुम मेरी एक घोड़ी को भी खो दोगे तो मैं तुम्हारा सिर काट दूँगी और जो मेरा जो यह आखिरी खम्भा खाली पड़ा है उस पर लगा दूँगी। तैयार हो?"

इवान राजी हो गया। बाबा यागा ने उसको कुछ खाना पीना दिया और उसको काम पर लगा दिया। इवान ने घोड़ियों को बाहर निकाला।

उन्होंने अपनी पूँछ हिलायी और घास के मैदान की तरफ भाग गयीं। इससे पहले कि वह उनको देखता वे तो इधर उधर भाग कर चली गयीं।

वह एक पत्थर पर बैठ गया और रोने लगा। कुछ देर बाद उसको नींद आ गयी। सूरज छिपने वाला था कि तभी वह समुद्र के ऊपर उड़ने वाली अजीब चिड़िया वहाँ आयी और इवान को जगाया।

"उठो इवान उठो। ज़रा देखो तो, तुम्हारी सब घोड़ियाँ तो अपनी घुड़साल में आ भी गयी हैं।"

इवान उठा और वापस घर पहुँचा तो उसने देखा कि उसकी सारी घोड़ियाँ तो घुड़साल में खड़ी हैं।

पर उधर बाबा यागा अपनी घोड़ियों पर चिल्ला रही थी और उनको बुरा भला कह रही थी — "तुम लोग सारी की सारी यहाँ वापस क्यों आ गयीं?"

घोड़ियाँ बोलीं — "हम क्या करतीं। सारी दुनियाँ की बहुत सारी चिड़ियें वहाँ आ गयीं थीं और अगर हम वहाँ से न भागते तो वे तो अपनी चोंचों से हमारी आखें ही निकाल लेतीं।"

"कोई बात नहीं कल तुम लोग जंगल की तरफ चली जाना।"

इवान रात को चैन की नींद सोया। सुबह को बाबा यागा ने उससे कहा — "तुम अपने आपको ठीक से देखना इवान। अगर आज रात एक घोड़ी भी वापस नहीं आयी तो कल तुम्हारा यह खूबसूरत सिर मेरे एक खम्भे पर सजा होगा।"

अगले दिन इवान ने सब घोड़ियों को घुड़साल से बाहर निकाला। घोड़ियों ने बाहर निकलते ही अपनी अपनी पूँछें हिलायीं और फिर से जंगल में काफी अन्दर तक भाग गयीं।

इवान फिर एक पत्थर पर बैठ गया और फिर रोने लगा। रोते रोते वह फिर वहीं सो गया।

वह सारा दिन सोता रहा। जब शाम हुई तो वहाँ एक शेर आया और बोला — "इवान उठो। देखो तुम्हारी घोड़ियाँ घुड़साल में सुरक्षित पहुँच गयीं हैं।"

इवान उठा और फिर घर वापस आया। बाबा यागा अपनी घोड़ियों पर फिर से चिल्ला रही थी। वह अपनी घोड़ियों पर पहले दिन से भी ज़्यादा गुस्सा थी — "तुम लोग घर वापस क्यों आयीं?"

बेचारी घोड़ियाँ बोलीं — "हम क्या करतीं? सारी दुनियाँ के जंगली जानवर हमको फाड़ खाने के लिये वहाँ आ गये थे।"

बाबा यागा बोली — "ठीक है ठीक है। कल तुम लोग नीले समुद्र की तरफ भाग जाना।"

रात को इवान चैन की नींद सोया। सुबह को बाबा यागा ने इवान से कहा — "इवान इन घोड़ियों का ध्यान रखना। अगर तुमने एक भी घोड़ी खोयी तो तुम्हारा यह सुन्दर सिर मेरे उस बारहवें खम्भे पर टॅगा होगा।"

इवान ने फिर घोड़ियाँ घुड़साल से बाहर निकालीं। बाहर निकलते ही उन्होंने सबने अपनी अपनी पूँछें हिलायीं और नीले समुद्र की तरफ भाग गयीं। वहाँ जा कर वे नीले समुद्र में गायब हो गयीं।

इवान फिर एक एक पत्थर पर बैठ गया और रोने लगा। रोते रोते वह फिर सो गया।

जब शाम हो गयी तो वहाँ एक शहद की मक्खी भिनभिनाती आयी और इवान से बोली — "इवान, जाओ घर जाओ। हमने तुम्हारी सब घोड़ियाँ घुड़साल में भेज दी हैं।

पर ध्यान रखना कि अब तुम बाबा यागा के सामने नहीं आना। वह तुमको देख नहीं पाये। तुम घुड़साल में घोड़ियों के चारे के बरतन के पीछे छिप जाना।

वहाँ पर एक बहुत ही गन्दी सी खाल की बीमारी वाली बच्ची घोड़ी है जो हमेशा गोबर में लेटी रहती है। तुम उस घोड़ी को चुरा

लेना, और वह भी आधी रात के बाद और उसको ले कर भाग जाना।”

इवान उठा और घुड़साल की तरफ चल दिया और घोड़ियों के खाने के बरतन के पीछे जा कर छिप गया।

उधर बाबा यागा अपनी घोड़ियों को फिर से डॉट रही थी — “तुमको फिर से वापस आने की क्या जरूरत थी?”

घोड़ियॉ बोली — “हम कुछ भी नहीं कर सके। वहॉ उतनी सारी शहद की मक्खियॉ थी जितनी कभी तुमने ज़िन्दगी भर में नहीं देखी होंगी। वे हमारे ऊपर सब तरफ से उड़ उड़ कर आ रही थीं और हमारी हड्डियों तक काटने की कोशिश कर रही थीं।”

यह सुन बाबा यागा सोने चली गयी। आधी रात को इवान ने वह गन्दी सी खाल की बीमारी वाली बच्ची घोड़ी उठायी और उस पर चढ़ कर आग की नदी की तरफ दौड़ गया।

वहॉ जा कर उसने अपना रूमाल अपने दॉये कन्धे के ऊपर तीन बार हिलाया तो वहॉ एक बहुत ऊँचा पुल खड़ा हो गया।

इवान ने वह पुल पार किया फिर दो बार उस रूमाल को अपने बॉये कन्धे के ऊपर हिलाया तो वह पुल तो वहीं रहा पर वह बहुत ही पतला हो गया था।

अगली सुबह बाबा यागा ने देखा कि उसकी एक बच्ची घोड़ी गायब थी। वह गुस्से में आग बबूला हो कर तुरन्त ही अपनी लोहे की ओखली में कूदी, अपने मूसल से उसको चलाया और अपनी झाड़ू से अपना रास्ता साफ करती हुई दौड़ गयी।

वह आग की नदी पर आयी तो सामने उसको पुल दिखायी दिया। उसने सोचा — "कितना शानदार पुल है।" और यह कह कर वह उस पुल के ऊपर दौड़ गयी।

पर यह क्या, वह पुल तो बीच में ही टूट गया। बाबा यागा उस आग की नदी में सिर के बल गिर पड़ी और एक बहुत ही दर्द भरी मौत मारी गयी।

इवान ने उस बच्ची घोड़ी को घास के मैदान में घास खिला कर मोटा किया। कुछ ही दिनों में वह बहुत ही बढ़िया घोड़ी हो गयी। इवान एक बार फिर मार्या के पास गया।

वह तुरन्त ही बाहर निकल कर आयी और खुशी से बोली — "ओह इवान, तुम अभी ज़िन्दा हो?"

इवान ने फिर उसको वह सब कुछ बताया जो उसके साथ वहाँ हुआ था और कहा — "चलो यहाँ से चलें।"

मार्या बोली — "पर इवान मुझे डर लगता है। अगर कहीं कोश्चेव हम लोगों को फिर से पकड़ ले तो। और तुम्हारे टुकड़े टुकड़े कर दे तो।"

इवान बोला — "नहीं इस बार वह ऐसा नहीं कर सकेगा। मेरी घोड़ी हवा की रफ्तार से भागती है।"

सो वे दोनों उस घोड़ी पर चढ़े और वहाँ से भाग लिये।

शाम को कोश्चेव जब घर वापस लौट रहा था तो उसका घोड़ा फिर से ठोकर खा कर गिर पड़ा।

"अरे तुमको क्या हो गया है? क्या घर में फिर कुछ गड़बड़ है?"

घोड़ा बोला — "इवान आया है और वह मार्या को ले गया है।"

कोशचेव ने पूछा — "क्या तुम उनको पकड़ सकते हो?"

घोड़ा बोला — "पता नहीं। इस बार इवान के पास एक नया घोड़ा है जो मुझसे भी ज़्यादा तेज़ दौड़ता है।"

कोश्चेव चिल्लाया — "नहीं। मैं इस बात को सहन नहीं कर सकता।"

यह तो मुझे पता नहीं कि कोश्चेव अपने घोड़े पर कितने घंटे या कितने दिन तक उसके पीछे भागा पर आखीर में उसने इवान को पकड़ ही लिया।

कोश्चेव अपने घोड़े से जमीन पर कूदा और इवान को अपनी तलवार से मारने ही वाला था कि इवान की घोड़ी ने उसको बहुत ज़ोर से लात मारी और उसका सिर छोटे छोटे टुकड़े हो कर बिखर गया। इवान ने उसको फिर अपना एक मोटा सा डंडा मार कर खत्म कर दिया।

फिर उसने एक बहुत बड़ी आग जलायी, कोश्चेव का शरीर उसमें जलाया और उसकी राख को चारों तरफ बिखेर दिया। मार्या कोश्चेव की घोड़ी पर चढ़ी, इवान अपनी घोड़ी पर चढ़ा और दोनों वहाँ से चल पड़े।

पहले वे रैवन के घर गये, फिर गरुड़ के घर गये और फिर बाज़ के घर गये। तीनों महलों में उनका ज़ोर शोर से स्वागत हुआ।

उसकी बहिनों ने कहा — "इवान, हमको तो लगा था कि अब हम तुमको देख ही नहीं पायेंगे। पर अब हमको पता चल गया कि तुमने यह यात्रा क्यों की थी। सारी दुनियाँ में तुम्हारी पत्नी जैसी सुन्दर और कोई लड़की तो हो ही नहीं सकती।"

वह अपनी इन तीनों बहिनों के साथ कुछ कुछ दिन रहा। बहुत सारी दावतें खायीं और फिर अपने राज्य की तरफ चल दिया वहाँ उसने मार्या के साथ बहुत दिनों तक खुशी खुशी राज किया।

7 गाता हुआ पेड़ और बोलती हुई चिड़िया[36]

पेड़ लगाने की यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के रूस देश की लोक कथाओं से ली गयी है। इस लोक कथा में पेड़ का काम एक चाकू करता है।

एक बार की बात है कि एक जगह एक बहुत ही उत्सुक राजा रहा करता था। वह हर चीज़ को जानना चाहता था। इसलिये वह हमेशा ही अपनी खिड़की से बाहर झॉकता रहता था।

वहीं एक सौदागर अपनी तीन बेटियों के साथ रहता था। एक दिन तीनों बेटियों ने अपने पिता से कहा — "काश राजा के घर में डबल रोटी पहुँचाने वाला ही मुझसे शादी कर ले।" दूसरी बेटी बोली — "काश राजा का कोचवान ही मुझसे शादी कर ले।" पर तीसरी बोली कि उसको तो खुद राजा चाहिये।

इत्तफाक की बात कि राजा यह बातचीत सुन रहा था। कुछ दिन बाद उसने वही किया जैसा कि वे लड़कियॉ चाहती थीं। सौदागर की सबसे बड़ी बेटी की शादी उसके घर में डबल रोटी पहॅुचाने वाले से हो गयी। बीच वाली लड़की शादी उसने अपने

---

[36] Singing Tree and Speaking Bird (Tale No 58) – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Book : "Russian Folk-Tales", by Alexander Nikolayevich Afanasief and Translated by Leonard Arthur Magnus. NY: EP Dutton. 1916. This book is available on the Web Site : https://en.wikisource.org/wiki/Russian_Folk-Tales

कोचवान से करा दी और तीसरी सबसे छोटी लड़की को वह खुद ब्याह कर ले आया।

राजा उससे शादी करके बहुत खुश था कि कुछ समय बाद रानी को बच्चे की आशा हो गयी तो वह शहर में से एक दाई[37] को बुला भेजने को था कि रानी की दोनों बड़ी बहिनों ने उससे कहा कि उसको दाई को बुलाने की जरूरत नहीं थी। वे यह काम कर देंगी।

ऐसा ही किया गया। रानी ने एक बेटे को जन्म दिया। दाइयों ने उसे वहॉ से हटा दिया और एक पिल्ला रख दिया और राजा से कह दिया कि उसकी पत्नी ने एक पिल्ले को जन्म दिया है। नये जन्मे बच्चे को उन्होंने एक बक्से में रखा और राजा के बागीचे के तालाब में बहा दिया।

इस बात पर राजा बहुत गुस्सा हो गया और अपनी पत्नी के अपनी बन्दूक की गोली से टुकड़े टुकड़े करने ही वाला था कि कुछ ऐसा हुआ कि कुछ बाहर के राजकुमार इस समय उसके मेहमान बन कर आये और उन्होंने राजा को रानी के इस पहले अपराध को माफ करने के लिये मना लिया।

सो राजा ने उसे माफ कर दिया और उसको दूसरा मौका दिया।

इस बात को एक साल गुजर गया और उसकी रानी को दूसरे बच्चे की आशा हो गयी। अबकी बार भी उसने एक बेटे को जन्म

[37] Translated for the word “Midwife”

दिया और इस बार भी उसकी बहिनों ने उसे वहाँ से हटा दिया और राजा से कह दिया कि उसने एक बिल्ली के बच्चे को जन्म दिया है।

इस बार वह बहुत गुस्सा था पर इस बार भी उसको किसी तरह शान्त कर दिया गया। उसने उसको तीसरा मौका दिया।

इस बार रानी ने एक बहुत ही सुन्दर बेटी को जन्म दिया। इस बार उसकी बहिनें उसको वहाँ से ले गयीं और राजा से कह दिया कि रानी ने एक राक्षस को जन्म दिया है।

इस बार राजा के गुस्से की कोई हद नहीं थी। उसने अपने फाँसी लगाने वाले को हुकुम दिया कि वह उसकी पत्नी को फाँसी लगा दे। पर इस बार भी उसके यहाँ कुछ राजकुमार मेहमान बन कर आये थे जिन्होंने उसे ऐसा करने से रोक लिया।

उन्होंने उसको सलाह दी कि "क्या यह अच्छा नहीं होगा कि चर्च के पास एक और छोटा चर्च बनवा दें और उनको उसमें रख दें और फिर जो कोई भी चर्च में जाये वह उसकी आँखों में थूकता हुआ जाये।"

सो राजा ने ऐसा ही किया पर जो कोई भी वहाँ से चर्च जाता वह उस पर थूकने की बजाय उसके लिये बढ़िया डबल रोटी लाता या पेस्ट्री लाता।

जब तीनों बच्चे राजा के बागीचे के तालाब के पानी में फेंके गये थे तो वे डूबे नहीं। राजा का माली ने उनको देख लिया और उनको अपने घर ले गया और उनको पालने पोसने लगा। बड़े हो

कर वे बहुत अच्छे बच्चे बन गये। वे बहुत जल्दी जल्दी बढ़ने लगे – सालों में नहीं बल्कि महीनों में, दिनों में नहीं बल्कि घंटों में।

राजा के बेटे बड़े होते गये और इतने अच्छे नौजवान बन गये कि कोई सोच भी नहीं सकता। और ज़ारेवना[38] तो बहुत ही सुन्दर थी बल्कि कुछ ज़रा ज़्यादा ही सुन्दर थी।

एक दिन जब वे बड़े हो गये तो उन्होंने माली से से कहा कि वे शहर के पीछे अपने लिये एक घर बनाना चाहते हैं। माली राजी हो गया और उन्होंने अपने लिये एक बहुत बड़ा शानदार घर बनाया और खुशी खुशी उसमें रहने लगे।

भाई लोग खरगोश के शिकार के लिये चले जाते। एक दिन वे शिकार खेलने गये और अपनी बहिन को घर में अकेला छोड़ गये।

किसी ने दरवाजा खटखटाया तो बहिन ने दरवाजा खोला तो देखा कि दरवाजे पर एक बुढ़िया खड़ी थी। वह बोली — "तुम्हारी तो यह बड़ी छोटी सी सुन्दर सी जगह है पर यहाँ तीन चीज़ों की कमी है।"

"वे क्या। मैं तो समझती थी कि हमारे पास सब कुछ है।"

बुढ़िया बोली — "तुम्हें एक तो बात करने वाली चिड़िया चाहिये दूसरे गाता हुआ पेड़ चाहिये और तीसरा ज़िन्दगी का पानी चाहिये।"

[38] Tzarevna means the Princess

इतना कह कर बुढ़िया तो चली गयी और राजकुमारी घर में फिर से अकेली रह गयी। जब उसके भाई शिकार से वापस आये तो उसने उनको बताया कि उनके घर में तीन चीज़ों की कमी है।"

"वे क्या चीज़ें हैं?"

"एक तो बात करने वाली चिड़िया, दूसरे गाता हुआ पेड़ और तीसरा ज़िन्दगी का पानी।"

यह सुन कर बड़ा भाई बोला — "बहिन तुम हमारे लिये अच्छा अच्छा सोचो। मैं इन तीनों चीज़ों की खोज में जाता हूँ और इन्हें तुम्हारे लिये ढूँढ कर ले कर आता हूँ। लो यह चाकू लो। अगर मैं मर गया या किसी ने मुझे मार दिया तो तुम्हें इस चाकू से पता चल जायेगा इस चाकू से खून टपकने लगेगा। लो इसे मैंने यहाँ इस दीवार में गाड़ दिया है।"

इतना कह कर वह चला गया। वह घूमता रहा कभी इस जंगल में कभी उस जंगल में। आखिर वह एक बहुत ही बड़े ओक के पेड़ के पास आ निकला। उस ओक के पेड़ पर एक बूढ़ा बैठा हुआ था। उसने उससे पूछा कि वह बात करती चिड़िया गाता हुआ पेड़ और ज़िन्दगी का पानी कहाँ पा सकता है।

बूढ़ा बोला — "इन्हें पाना मुमकिन तो है पर आसान नहीं है। वहाँ बहुत लोग जाते हैं पर लौटता कोई नहीं।"

नौजवान ने उससे जानने की जिद की और बूढ़े को वहीं छोड़ कर चल दिया। बूढ़े ने उसको एक बेलन दिया और उससे कहा कि

वह उसको अपने सामने लुढ़का दे और वह उसके पीछे पीछे चलता जाये जहाँ भी वह उसे ले जाये। उसने बेलन लुढ़का दिया वह लुढ़कता गया और नौजवान उसके पीछे चलता रहा।

लुढ़कते लुढ़कते वह एक खड़ी चढ़ाई वाली पहाड़ी पर चढ़ने लगा और फिर खो गया। राजकुमार पहाड़ी के ऊपर तक चला गया। जब वह आधे रास्ते में था तो जाते समय उसने एक आवाज सुनी — "पकड़ लो इसको बाँध लो इसको।"

उसने पलट कर देखा तो वह पत्थर का हो गया। उसी समय उसके घर में छोड़े हुए चाकू से खून टपकना शुरू हो गया। बहिन ने बताया कि बड़ा भाई मर गया है।

तो छोटा भाई बोला — "बहिन तू चिन्ता मत कर अब मैं उन चीज़ों को लेने जाऊँगा – बोलती हुई चिड़िया, गाता हुआ पेड़ और ज़िन्दगी का पानी।"

बहिन ने उसकी यात्रा के लिये भी उसके अच्छे की प्रार्थना की और वह भी उनको लाने चल दिया। वह बहुत दूर तक चलता रहा मीलों हो गये। चलते चलते वह भी उसी ओक के पेड़ के पास आ गया जिस पेड़ के पास उसका बड़ा भाई आया था।

उसने भी वहाँ एक बूढ़ा बैठा देखा तो उससे पूछा कि उसको बोलती हुई चिड़िया गाता हुआ पेड़ और ज़िन्दगी का पानी चाहिये। ये सब उसे कहाँ मिलेंगे।

बूढ़े ने उसे भी एक बेलन दिया और उसको अपने सामने लुढ़काने और उसको उसके पीछे जाने के लिये कहा जहाँ भी वह उसे ले जाये। वह बेलन फिर से उसी पहाड़ी पर लुढ़का पर कुछ दूर जाने के बाद वह उसकी भी आँखों से ओझल हो गया।

इस बार दोनों खो गये बेलन भी और राजकुमार भी।

बहिन ने कई सालों तक इन्तजार किया पर वह वापस नहीं आया। उसने सोचा कि शायद वह भी मर गया होगा। सो अब वह खुद बोलती हुई चिड़िया गाता हुआ पेड़ और ज़िन्दगी का पानी ढूँढने के लिये निकल पड़ी।

वह भी उसी ओक के पेड़ के पास आ निकली। उसको भी एक बूढ़ा उस पेड़ पर बैठा हुआ मिला। उसने उसको नमस्ते की, उसके बाल काटे और उसकी भौंहें साफ की। वह अपने साथ एक कैंची औए शीशा साथ लायी थी।

यह करके उसने उसको शीशा दिखाते हुए पूछा — "बाबा देखिये अब आप कितने अलग लगते हैं।"

उसने शीशे में देखा और बोला — "हाँ यह तो है। अब तो मैं एक बहुत ही अच्छा आदमी बन गया। मैं यहाँ **30** साल से बैठा हुआ हूँ। आज तक किसी ने मेरे बाल नहीं काटे। केवल तुमने मेरी जरूरत को जाना।"

फिर उसने बाबा से पूछा — "बाबा मुझे बोलती हुई चिड़िया गाता हुआ पेड़ और ज़िन्दगी का पानी कहाँ मिलेगा।"

वह बोला — "वे कहाँ मिलेंगे? उनके बाद तुम एक अक्लमन्द लड़की आयी हो। वे तो खो ही गये।"

लड़की ने जिद की — "मेहरबानी करके मुझे बताइये कि मैं उनको कैसे पा सकती हूँ।"

सो उसने उसको एक नया बेलन दिया और उसको लुढ़का कर उसके पीछे जाने के लिये कहा। उसने उससे यह भी कहा कि बीच में उसको कुछ आवाजें सुनायी देंगी जैसे "पकड़ लो बाँध लो" आदि। ऐसी आवाजें सुन कर उसे पीछे नहीं देखना है। ऐसा करने से वह पत्थर की बन जायेगी।

बस तुम चढ़ती जाना। ऊपर जा कर तुमको एक कुँआ मिलेगा और एक गाती हुई चिड़िया मिलेगी। जब तुम वापस आ रही होगी तो तुमको बहुत सारे पत्थर मिलेंगे जो सीधे खड़े होंगे। तुम उन सब पर ज़िन्दगी पानी छिड़का देना।"

उसने वह बेलन अपने आगे लुढ़का दिया और वह खुद उसके पीछे पीछे चलने लगी। पहले वह ढालू पहाड़ के पास पहुँची फिर उसकी चोटी पर पहुँच गयी। वहाँ जा कर उसको आवाजें सुनायी पड़ीं – "तुम कहाँ जा रही है? हम तुम्हें मार डालेंगे। हम तुम्हें खा जायेंगे।"

पर वह डरी नहीं न तो उसने मुड़ कर देखा और बस चलती ही गयी। जब वह बिल्कुल ऊपर पहुँच गयी तो उसे वहाँ पर एक कुँआ मिला। एक बात करती हुई चिड़िया मिली।

उसने चिड़िया को उठा लिया और उससे पूछा — "मुझे गाता हुआ पेड़ और ज़िन्दगी का पानी कहाँ मिलेगा?"

चिड़िया बोली — "तुम इस रास्ते से चली जाओ।"

वह उस रास्ते पर गयी तो उसको गाता हुआ पेड़ मिल गया।

वहाँ बहुत सारे तरीके की चिड़ियाँ गा रही थीं। उसने उस पेड़ में से एक टहनी तोड़ ली। एक लिली का फूल तोड़ लिया। कुँए के पानी को फूल में भर लिया और वहाँ से घर वापस चली।

जैसे ही वह पहाड़ी से नीचे उतर रही थी उसने कुछ पत्थर के टुकड़े सीधे खड़े हुए देखे तो उसने वह ज़िन्दगी का पानी उन पर छिड़क दिया। पानी छिड़कते ही उसके दोनों भाई ज़िन्दा हो गये और बोले — "ओह हम लोग कितनी देर तक सोते रहे।"

बहिन बोली — "हाँ मेरे भाइयो। पर मेरे लिये तो तुम लोग हमेशा के लिये सोते रहते। और यह देखो मुझे यह बात करने वाली चिड़िया भी मिल गयी। यह गाता हुआ पेड़ मिल गया और यह ज़िन्दगी का पानी भी मिल गया।"

वह सब देख कर उसके भाई बहुत खुश हुए। घर पहुँच कर उन्होंने गाता हुआ पेड़ अपने बागीचे में लगा दिया तो वह सारे बागीचे में फैल गया और उस पर तरह तरह की चिड़ियें गाने लगीं।

एक दिन वे शिकार पर गये तो इत्तफाक से वहाँ उनको राजा मिल गया तो वह उन्हें देखते ही प्यार कराने लगा और अपने घर आने के लिये कहा। भाइयों ने कहा कि वे पहले अपनी बहिन से पूछ लें तब उसको बता सकेंगे कि वे उसके घर आ सकते हैं या नहीं।

घर वापस जा कर उन्होंने अपनी बहिन से पूछा — "बहिन क्या हम लोग राजा के घर जा सकते हैं और उनके साथ खाना खा सकते हैं? उन्होंने हमें बुलाया है।" बहिन राजी हो गयी और फिर वे राजा के घर घये।

खाने की मेज पर राजा ने उनको आदर से बिठाया तो उन्होंने भी उससे कहा कि वह भी उनके घर आयेगा। कुछ दिनों बाद राजा उनके घर गया। उन्होंने उसको बहुत अच्छा खाना खिलाया और उसको गाता हुआ पेड़ और बोलती हुई चिड़िया दिखायी।

वह उन दोनों चीज़ों को देख कर बहुत आश्चर्य कर ने लगा और कहा — "मैं तो यहाँ का राजा हूँ और मेरे पास तो ऐसा कुछ भी नहीं है।"

पहले तो राजा उनको कुछ देर तक देखता रहा फिर उनसे पूछा — "तुम्हारे पिता कौन हैं?"

उन्होंने कहा — "हमें नहीं मालूम।"

तब बोलती चिड़िया बोली — "ये आप ही के बच्चे हैं।"

राजा ने फिर लड़की की तरफ देखा तो उसकी उससे शादी करने की इच्छा हुई। इस पर बोलने वाली चिड़िया ने कहा — "राजा साहब आप इससे शादी नहीं कर सकते। यह तो आप ही की बेटी है।"

तब राजा को पता चला कि यह सब क्या घोटाला था तो वह तो बहुत ही खुश हो गया।

वह उनको हमेशा के लिये अपने साथ रहने के लिये अपने घर ले गया। रानी की दोनों बहिनों को उसने मरवा दिया। अपनी पत्नी को चर्च से अपने घर बुलवा लिया। वे सब बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे।

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

36 पुस्तकें www.Scribd.com/Sushma_gupta_1 पर उपलब्ध हैं।

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।
Write to :- E-Mail : hindifolktales@gmail.com

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें ई–मीडियम पर सोसायटी औफ फौकलोर, लन्दन, यू के, के पुस्तकालय में उपलब्ध हैं।
Write to :- E-Mail : thefolkloresociety@gmail.com

1 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं — 10 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — 45 लोक कथाऐं — सामान्य छापा, मोटा छापा दोनों में उपलब्ध

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।
To obtain them write to :- E-Mail drsapnag@yahoo.com

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — प्रभात प्रकाशन
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — प्रभात प्रकाशन
4 शेबा की रानी मकेडा और राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
5 राजा सोलोमन — प्रभात प्रकाशन
6 बंगाल की लोक कथाऐं — नेशनल बुक ट्रस्ट

नीचे लिखी पुस्तकें रचनाकार डाट आर्ग पर मुफ्त उपलब्ध हैं जो टैक्स्ट टू स्पीच टैकनोलोजी के द्वारा दृष्टिबाधित लोगों द्वारा भी पढ़ी जा सकती हैं।

1 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/08/1-27.html
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/08/2-1.html
3 रैवन की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1.html
4 रैवन की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/09/2-1.html
5 रैवन की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/09/3-1-1.html
6 इटली की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2017/09/1-1_30.html

7 इटली की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2017/10/2-1.html
8 इटली की लोक कथाऐं–3
http://www.rachanakar.org/2017/10/3-1.html
9 इटली की लोक कथाऐं–4
http://www.rachanakar.org/2017/10/4-1.html
10 इटली की लोक कथाऐं–5
http://www.rachanakar.org/2017/10/5-1-italy-lokkatha-5-seb-wali-ladki.html
11 इटली की लोक कथाऐं–6
http://www.rachanakar.org/2017/11/6-1-italy-ki-lokkatha-billiyan.html
12 इटली की लोक कथाऐं–7
http://www.rachanakar.org/2017/11/7-1-italy-ki-lokkatha-kaitherine.html
13 इटली की लोक कथाऐं–8
http://www.rachanakar.org/2017/12/8-1-italy-ki-lokkatha-patthar-se-roti.html
14 इटली की लोक कथाऐं–9
http://www.rachanakar.org/2017/12/9-1-italy-ki-lok-katha-do-bahine.html
15 इटली की लोक कथाऐं–10
http://www.rachanakar.org/2017/12/10-1-italy-ki-lok-katha-teen-santre.html
16 ज़ंज़ीबार की लोक कथाऐं
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_54.html
17 चालाक ईकटोमी
http://www.rachanakar.org/2018/05/blog-post_88.html
18 नौर्स देशों की लोक कथाऐं–1
http://www.rachanakar.org/2018/10/1.html
19 नौर्स देशों की लोक कथाऐं–2
http://www.rachanakar.org/2018/12/2.html

नीचे लिखी पुस्तकें जुगरनौट डाट इन पर उपलब्ध हैं
https://www.juggernaut.in/authors/2a174f5d78c04264af63d44ed9735596
1 सोने की लीद करने वाला घोड़ा और अन्य अफ्रीकी लोक कथाऐं
2 असन्तुष्ट लड़की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
3 रैवन आग कैसे लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
4 रैवन ने शादी की और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं
5 कौआ दिन लेकर आया और अन्य अमेरिकी लोक कथाऐं

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated on Dec 27, 2018

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **1500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
दिसम्बर **2018**